Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ
فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ
وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ
هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ

(सूरः आराफ़ : 157)

अनुवाद : और मेरी रहमत वह है कि हर चीज़ पर हावी है । अतः मैं इस (रहमत) को उन लोगों के लिए अनिवार्य कर दूँगा जो संयम धारण करते हैं और ज़कात देते हैं और वे जो हमारी आयात पर ईमान लाते हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 40

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

09 रबीउल अव्वल 1444 हिज्री कमरी, 06 इखा 1401 हिज्री शम्सी, 06 अक्टूबर 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

बेचने के उद्देश्य से जिस जानवर के थन में दूध रोक लिया गया हो

(2151) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने ऐसी बकरी ख़रीदी जिसका दूध थनों में रोक कर इकट्ठा किया गया हो और वह उसे दोहे, अगर उसने उसे पसंद कर लिया है तो उसे रख ले और अगर उसने नापसंद किया है तो उसके दूध के बदले एक साअ खजूर देना होगी।

नमाज़ को सँवार कर पढ़ने पर बैअत

(2157) इस्माईल ने क़ैस (बिन अबी हाज़िम) से रिवायत की (और कहा) कि मैं ने हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हो से सुना, वह कहते थे : मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस इक़रार पर बैअत की कि अल्लाह तआला के सिवा कोई उपास्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं और नमाज़ सँवार कर पढ़ूंगा और ज़कात दूँगा और (हर आदेश रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सुनूँगा और इताअत करूँगा और हर मुस्लमान की ख़ैर ख़्वाही करूँगा।

मुशरिक से कुछ ख़रीदना

(2216) हज़रत अबदुर्रहमान बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि हम नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ थे इतने में एक मुशरिक आदमी जो बिखरे बाल लम्बे कद का था, अपनी बकरियों को हांकते हुए आया नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : ये बेचनी हैं या भेंट हैं? (रावी कहता है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने शब्द)अतीया फ़रमाया या हिबा। उसने कहा : नहीं, बल्कि बेचनी हैं। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उससे एक बकरी ख़रीदी।

(बुख़ारी, भाग 4 किताब अल् बीयू, मुद्रित 2008 क़ादियान) ★ ★ ★

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह भविष्यवाणी हुई थी कि एक शख़्स आपकी उम्त में से अवतरित किया जावेगा जो सलीबी मज़हब की हक़ीक़त को खोल कर दिखा देने और सलीब को तोड़ देने वाला होगा और इसी लिहाज़ से वह मसीह इब्ने मरियम होगा और अंदरूनी मतभेदों और बे राहियों को दूर कर के मुस्लमानों को हिदायत की सच्ची राह पर क़ायम करेगा, इस लिए वह महदी कहलाएगा

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

आँहज़रतसल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आख़िरी ज़माने के वास्ते ख़बर दी थी कि इस वक़्त दो रंग के फ़ित्ने होंगे। एक अंदरूनी, दूसरा बैरूनी। अंदरूनी फ़ित्ना यह होगा कि मुस्लमान सच्ची हिदायत पर क़ायम नहीं रहेंगे और शैतानी अमल दख़ल के नीचे आ जाऐंगे। जुआ, व्यभिचार, शराबखोरी और हर किस्म के भ्रष्टाचार में मुबतला हो कर अल्लाह की हद से निकल जाऐंगे और ख़ुदा तआला के नवाही की परवाह नहीं करेंगे। नमाज़ रोज़ा को तर्क कर देंगे और ख़ुदा के आदेशों का अपमना किया जाएगा और क़ुरआन के आदेशों के साथ हंसी ठट्ठा किया जाएगा। बैरूनी फ़ित्ना यह होगा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी पर इफ़्तिरा किए जाऐंगे और हर किस्म के दिल-आज़ार हमलों से इस्लाम की तौहीन और तख़रीब की कोशिश की जावेगी। मसीह ख़ुदाई को मनवाने के लिए और उसकी सलीबी लानत पर ईमान लाने के वास्ते हर किस्म के हीले और तदाबीर अमल में लाई जावेंगी। उद्देश्य इन दोनों अंदरूनी और बैरूनी अज़ीमुश्शान फ़ित्नों की सूचना के वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को साथ ही यह भविष्यवाणी मिली कि एक शख़्स आपकी उम्मत में से अवतरित किया जावेगा जो बैरूनी फ़ित्ना और सलीबी मज़हब की हक़ीक़त को खोल कर दिखा देने और सलीब को तोड़ देने वाला होगा और इसी लिहाज़ से वह मसीह इब्ने मरियम होगा और अंदरूनी मतभेदों और बे राहियों को दूर करके हिदायत की सच्ची राह पर क़ायम करेगा। इस लिए महदी कहलाएगा। इसी बशारत की तरफ़ वा आख़रीना मिनहम में भी इशारा है। जबकि यह दोनों फ़ित्ने होंगे,उन फ़ित्नों की बुनियाद दो ख़बीस चीज़ों पर होगी। एक फ़िर्क़ा होगा जो अल् दज्जाल कहलाएगा और एक याजूज। (मल् फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 401 प्रकाशन क़ादियान 2018 ई.)

★ ★ ★

ख़ुदा तआला ने जिन वस्तुओं को हलाल किया है उन्ही को हम हलाल कह सकते हैं और जिनको हराम कहा है उन्ही को हम हराम कह सकते हैं
बाक़ी जो दरमयानी चीज़ें हैं उनके विषय में हुक्म हलाल और हराम के अधीन होगा
बाक़ी वस्तुओं में से जो तय्यब हैं वे हलाल हैं और जो तय्यब नहीं वे हलाल नहीं

[अनुवाद उसने तुम पर केवल मुर्दार को और ख़ून को और सूअर के गोश्त को और (हर) उस चीज़ को हराम किया है जिस पर अल्लाह (तआला) के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो और जो शख़्स (उनमें से किसी चीज़ के खाने पर मजबूर किया जाए जबकि वह न बाग़ी हो और न हद से बढ़ने वाला हो तो (याद रहे कि अल्लाह (तआला) यक़ीनन बहुत बख़शने वाला (और बार-बार रहम करने वाला है] की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

इस आयत के विषय में एक बहुत बड़ा सवाल यह पैदा होता है कि इस में चार चीज़ों की हुर्मत वर्णन फ़रमाई गई है। क्या यही चार चीज़ें हराम हैं और उनके सिवा और कोई चीज़ हराम नहीं ...

रहा उन लोगों का कथन जिन्होंने कहा है कि यही चीज़ें हराम हैं कोई और चीज़ हराम नहीं, अतः मेरे नज़दीक उनकी बात दरुस्त है क्योंकि उसके सिवा और कोई अर्थ नहीं बन सकते। जिन लोगों का यह मज़हब है उनमें से एक इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। उनके विषय में बुख़ारी में जाबिर बिन अब्दुल्लाह से एक रवायत आती है कि उनका यही मज़हब था कि यही चार चीज़ें हराम हैं जो इस आयत में वर्णन हैं।

(सही बुख़ारी, भाग 3 रूहुल मआनी, भाग 8)

और अबू दाऊद की रिवायत है कि इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का भी यही मज़हब था। इस में आता है कि اَنَّهٗ سُئِلَ عَنْ اُكُلِ الْقَنْفُذِ فَتَلَا قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ الآيَة

(सुंन अबू दाऊद, भाग 3, किताब अल् अत्मह)

और हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से भी इब्ने अबी हातिम ने और कुछ और लोगों ने मस्नद से वर्णन किया है कि اِنَّهَا كَانَتْ اِذَا سُئِلَتْ عَنْ اَكْلِ كُلِّ ذِيْ نَابٍ مِنَ السِّبَاعِ وَ مُخْلَبٍ مِنَ الطَّيْرِ قَالَتْ قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ الآيَة (रूहुल मानी, भाग : 8)

इसी तरह इब्ने अबी हातिम ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु

शेष पृष्ठ 10 पर

इस से मालूम हुआ कि सब हलाल चीज़ें तय्यब नहीं हैं, जो तय्यब हैं सिर्फ उनका खाना जायज़ है बाक़ी का खाना जायज़ नहीं

सय्यदना हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरत अल् नहल आयत : 116 اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की जर्मन यात्रा जून 2014 ई. (भाग-8)

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

9 जून 2014 दिन सोमवार

इसके बाद मेहमानों की सेवा में खाना प्रस्तुत किया गया। खाने के प्रोग्राम के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ स्टेज से नीचे तशरीफ़ ले आए और बहुत से मेहमानों ने बारीबारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात की और हाथ मिलाने के सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक मेहमानों से बातचीत फ़रमाई। बहुत से मेहमानों ने निवेदन करके हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीरें खिचवाई।

ज़िला अदालत के रिटायर्ड जज Anton Sprenzel साहब ने मुंतज़मीन से इस इच्छा का प्रकटन किया कि वह ख़लीफतुल मसीह के साथ तस्वीर बनवाना चाहते हैं इस लिए मुंतज़मीन उनको हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पास लाए उन्होंने हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया और तस्वीर बनवाई और बेहद ख़ुशी का प्रकटन किया।

जर्मनी की नैशनल पार्लेमंट Miss Rita Hagl Kehl और ज़िला असैंबली की मेम्बर आफ़ पार्लेमंट Ruth Muller ने जब हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की तो कहा कि ख़लीफतुल मसीह की ऐसी प्रभावी तक़रीर सुनने के बाद हमने ज़रूरी समझा कि मिलकर आपका शुक्रिया अदा करें और संसार में अमन क़ायम करने के सम्बन्ध में आप जो प्रयास कर रहे हैं और आज के ऐडरैस पर हम आपको मुबारकबाद देती हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यदि आपको मेरी बातें अच्छी लगी हैं तो फिर आप भी इस बारे में हमारा साथ दें।

Neufahrn शहर के मेयर ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अपनी गोल्डन बुक प्रस्तुत की कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस पर अपने रिमार्कस तहरीर फ़रमाएं।

मेयर साहब की दरख़ास्त पर हुज़ूर अनवर ने निमंलिखित शब्द तहरीर फ़रमाए :

I am very much impressed and appreciate the kind gesture and response of the people of this town and in particulat the mayor.

Mirza Masroor Ahmad

(मैं इस शहर के लोगों और विशेषता मेयर के अच्छे व्यवहार और सहयोग से बहुत प्रभावित हुआ हूँ और उसे बड़ी क़दर की निगाह से देखता हूँ)

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हाल के बाहर खुले लॉन में तशरीफ़ ले आए जहां हुज़ूर अनवर के सम्मान में Neufahrn राइफ़ल कलब की ओर से फायरिंग का एक प्रोग्राम प्रस्तुत किया गया। यह उन का एक रिवायती प्रोग्राम है जो यह किसी अत्यधिक बड़ी सम्मानिय व्यक्ति की आमद पर प्रस्तुत करते हैं और अपनी ओर से पूरा सम्मान देते हैं। ये लोग विशेष ढंग की बंदूक़ (Guns) प्रयोग करते हैं जिसमें गोली (Bullet) प्रयोग नहीं होती बल्कि बारूद भरा जाता है और फिर लक्कड़ी की एक छड़ी और हथौड़े की सहायता से इस को प्रैस किया जाता है इसके बाद फ़ायर किया जाता है। ये छः से सात लोग का ग्रुप था जो कई दफ़ा इकट्ठे और कई दफ़ा बारी-बारी अपनी Guns ऊपर की ओर बुलंद करके फ़ायर करते थे। इस प्रदर्शन के बाद इस ग्रुप ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाई और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक उनसे उनके इस रिवायती प्रदर्शन के बारे में और इस ख़ास Guns के सम्बन्ध में बातचीत फ़रमाई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ यहां से रवाना हो कर सवा आठ बजे मस्जिद महदी तशरीफ़ ले आए और अपने दफ़्तर में तशरीफ़ फ़र्मा हुए। आदरणीय आबिद वहीद ख़ान साहब इंचार्ज प्रैस ऐंड मीडिया ऑफ़िस ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की और विभिन्न मामलों में रहनुमाई प्राप्त की इसके बाद आदरणीय प्राईवेट सेक्रेटरी साहब ने कुछ मामलों प्रस्तुत करके रहनुमाई की।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए। साढ़े नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद महदी पधार कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

आज मस्जिद महदी की उद्घाटन समारोह में जो मेहमान शामिल हुए वह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की रुहानी व्यक्ति और हुज़ूर अनवर के भाषण से प्रभावित हुए बिना न रह सके और बहुतों ने बरमला अपनी भावनाओं और विचारों का प्रकटन किया। एक जर्नलिस्ट ने कहा कि ख़लीफतुल मसीह ने जो अमन का संदेश दिया है वह आपके सारे व्यक्तित्व से प्रकट हो रहा था और सारे हाल पर इस का गहरा प्रभाव था। सारे हाल में अमन ही अमन छाया हुआ था। एक जर्नलिस्ट महिला ने कहा आपके ख़लीफ़ा के चेहरे पर-नूर नज़र आता है। यह ख़ामोश भी रहें तो सारा दिन उनको देखने को दिल करता है। इन्सान देखता ही जाए।

एक महिला ने अपनी भावनाओं का प्रकटन करते हुए कहा कि ख़लीफतुल मसीह ने जब अपने ऐडरैस में डाक्टर साहब की शहादत का वर्णन किया तो मैं बर्दाश्त न कर सकी और रोने लग गई। फिर ख़लीफतुल मसीह ने जब यह कहा कि इस शहादत के अतिरिक्त हमारी सेवा की भवना में कोई कमी नहीं आई और हम ये सेवा जारी रखेंगे तो अपनी भावनाओं पर कंट्रोल करना मेरे लिए मुश्किल हो गया।

एक मेहमान ने कहा : मेरी हुज़ूर अनवर के साथ बड़ी अच्छी बातचीत हुई। हुज़ूर अनवर के व्यक्तित्व से रूहानियत टपकती है। मैंने हुज़ूर अनवर को और आपकी जमाअत को स्वागतम कहा। मैं देखता हूँ कि जमाअत Neufahrn दूसरों से बातचीत के लिए कुशादा दिल रखती है। मस्जिद का मीनार इस बात का निशान है कि यह जमाअत यहां घुल मिल गई है। हुज़ूर अनवर एक रुहानी व्यक्तित्व हैं जिनके पास धर्म का अलम और अनुवभ है जिस तरह जमाअत के लोग हुज़ूर अनवर की तशरीफ़ आवरी पर ख़ुश हैं, इस से पता लगता है कि आप एक सम्मानिय व्यक्ति और संसार में एक बड़ी ज़िम्मेदारी सँभाले हैं।

एक साहब ने अपनी भावनाओं का प्रकटन करते हुए कहा : हुज़ूर अनवर एक ऐसी जमाअत के प्रधान हैं जिसने मेरे दिल में जगह बना ली हुई है UN की ओर से धार्मिक आज़ादी के विशेष रिपोर्टर की हैसियत से यह मेरा काम है कि जहां किसी धार्मिक जमाअत की हक़तलफ़ी देखूं वहां UNO को इस से अवगत करूँ। जमाअत अहमदिया का विरोध हो रहा है। विशेषता पाकिस्तान में जहां अहमदियों को क़तल किया जा रहा है और उनके विरुद्ध भड़काया जा रहा है। अब तो हमारी मीटिंगों में कोई बातचीत जमाअत के वर्णन के बिना मुकम्मल ही नहीं होती। तीन वर्ष पहले मुझे फ़्रैंकफ़र्ट में हुज़ूर अनवर के साथ आधा घंटा बातचीत का अवसर मिला। जमाअत इस मुल्क में नई नहीं, अब तो जमाअत के लोगों की दूसरी तीसरी नसल चल रही है। जर्मनी में मंसूबे बन रहे जैसा कि Hessen में स्कूलों में इस्लामी शिक्षा सिखाई जाए और जमाअत को चर्च के बराबर जो रुत्बा मिला है इससे और भी आसानी हो गई है। यह इन्साफ़ का तक़ाज़ा है कि जर्मनी के स्कूलों में इस्लामी शिक्षा दी जाए। संसार के प्रत्येक मुल्क में यह सहूलत नहीं है।

एक साहब कहते हैं : मैं हुज़ूर अनवर के भाषण से प्रभावित हुआ हूँ। हुज़ूर अनवर ने अमन और मुहब्बत के संदेश को स्पष्ट किया है। मैं शुक्रगुज़ार हूँ कि मैं इस समारोह में शामिल हो सका। जमाअत अहमदिया हमारे क्षेत्र और शहर Neufahrn का हिस्सा है। शब्द एक चीज़ है परन्तु अपने अनुकरण से दिखाना ज़रूरी है जिस के लिए मस्जिद का होना ज़रूरी है। इस लिए मेरा विचार है कि यह मस्जिद इस शहर के लिए एक अच्छी बढ़ोतरी है।

एक साहब ने कहा : मेरा दिल-ख़ुशी की भावनाओं से लबरेज़ है कि मुझे एक ऐसी

शेष पृष्ठ 10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

दमिशक़ की फ़तह को कुछ इतिहासकार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अहद-ए-ख़िलाफ़त में वर्णन करते हैं लेकिन दमिशक़ का यह मार्का हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के अहद-ए-ख़िलाफ़त में शुरू हो चुका था, जबकि उसकी फ़तह की ख़बर जब मदीना भेजी गई तो उस वक़्त हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात हो चुकी थी

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के बाबरकत दौर के अंतिम मार्का अर्थात फ़तह दमिशक़ का विस्तारपूर्वक वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 02 सितम्बर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने की जंगों का वर्णन हो रहा था। इस विषय में फ़तह दमिशक़ जो तेराह हिज्री में हुई इसके बारे में कुछ तफ़सील वर्णन करता हूँ। यह अंतिम जंग थी जो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में हुई। दमिशक़ के स्थान के बारे में है कि यह पुराना दमिशक़ शाम का दारुल हकूमत और तारीख़ी रिवायात का हामिल शहर था। आरम्भ में ये बुतपरस्ती का बहुत बड़ा केंद्र था लेकिन जब ईसाइयत आई तो उसके पूजा स्थल को कलीसिया बना दिया गया। यह एक अहम व्यापारिक केंद्र था। यहां अरब भी आबाद थे और मुस्लमानों के तिजारती क़ाफ़िले यहां आते रहते थे और इसी वजह से उन्हें यहां के बारे में मालूमात हासिल थीं। दमिशक़ एक क़िला नुमा फ़सील बंद शहर था। हिफ़ाज़त और पाएदारी की वजह से उसे इमतेयाज़ी हैसियत हासिल थी। इस की फ़सील बड़े-बड़े पत्थरों से बनाई गई थी। फ़सील की ऊंचाई छः मीटर थी। इस में इंतेहाई मज़बूत दरवाज़े लगाए गए थे। फ़सील की चौड़ाई तीन मीटर थी। दरवाज़े मज़बूती से बंद किए जाते थे। फ़सील के चारों तरफ़ गेहरी ख़ंदक़ थी जिसकी चौड़ाई तीन मीटर थी। इस ख़ंदक़ को दरिया के पानी से हमेशा भर कर रखा जाता था। इस तरह दमिशक़ काफ़ी मज़बूत और महफ़ूज़ हैसियत रखता था जिसमें दाख़िल होना आसान नहीं था।

(उद्धरित सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ अली मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 725 मकतबा अल् फ़ुकान मुज़फ़्फ़र गढ़)

जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने शाम की जानिब मुख़्तलिफ़ लश्कर रवाना फ़रमाए तो हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को एक लश्कर का अमीर बना कर हुम्मस पहुंचने का हुक्म दिया। हुम्मस दमिशक़ के क़रीब शाम का एक पुराना प्रसिद्ध और बड़ा शहर था।(उद्धरित तारीख़ तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 333 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 106 ज़व्वार अकैडमी कराची)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के इरशाद पर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो ने दमिशक़ पहुंच कर दूसरे इस्लामी लश्कर के साथ उसका घेराव कर लिया। दमिशक़ वाले क़िला की दीवार पर चढ़ कर मुस्लमानों पर पत्थर और तीर बरसाते थे। मुस्लमान चमड़े की ढालों से अपने आपको बचाते। अवसर पा कर मुस्लमान भी उनको तीर मारते। इस तरह बीस दिन का अरसा गुज़र गया लेकिन कोई नतीजा बरामद न हुआ।

अहल-ए-दमिशक़ क़िला में कैद होने की वजह से सख़्त तंगी में थे। क़िला में आहार भी ख़त्म होने वाला था। इसके इलावा दमिशक़ वाले के खेत क़िला से बाहर थे इस लिए उनकी काशतकारी के कामों को नुक़्सान हो रहा था। क़िला में आहार नहीं आ सकता था। समान की भी कमी थी। मुहासरे के लम्बे होने की वजह से वे सख़्त परेशानी और मुसीबत में मुबतला हो गए थे। इसी दौरान जबकि दमिशक़ के मुहासरे को बीस दिन गुज़र चुके थे मुस्लमानों को ख़बर मिली कि हरक़्ल बादशाह ने अजनादीन के स्थान पर रोमियों का भारी लश्कर जमा किया है। यह ख़बर सुनते ही हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो बाब-ए-शर्क़ी से रवाना हो कर बाब-ए-जाबिया पर हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए और सूरत-ए-हाल से अवगत करते हुए अपनी राय पेश की कि हम दमिशक़ का मुहासरा तर्क करके अजनादीन में रूमी लश्कर से निपट लें और अगर अल्लाह ने हमें फ़तह दी तो फिर यहां वापस लौट आएँगे और दमिशक़ का मसला हल करेंगे। हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मेरी राय इसके विपरीत है क्योंकि बीस दिन तक क़िला में कैद रहने की वजह से दमिशक़ वाले तंग आ गए हैं और हमारा रोब उनके दिलों में समा गया। अगर हम यहां से कूच कर गए तो उनको राहत हासिल होगी और वे खाने पीने की चीज़ें क़िला में बड़ी संख्या में ज़ख़ीरा कर लेंगे और जब हम अजनादीन से यहां वापस आएँगे तो ये लोग तवील अरसा तक हमारा मुक़ाबला करने के योग्य हो जाऐंगे।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो की राय से सहमती करते हुए मुहासरा जारी रखा और दमिशक़ के क़िला के मुतफ़र्रिक़ दरवाज़ों पर मुस्लमानों के समस्त निर्धारित सरदारों को हुक्म दिया कि अपनी अपनी तरफ़ से हमला में शिद्दत इख़्तेयार करें।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के हुक्म की तामील करते हुए हर जानिब से इस्लामी लश्कर ने शदीद हमले शुरू किए। इस तरह दमिशक़ के मुहासरे पर इक्कीस दिन गुज़र गए।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुस्लमानों को हमला की शिद्दत बढ़ाने की तरग़ीब देते हुए ख़ुद बाब-ए-शर्क़ी से सख़्त हमले जारी रखे। अहल-ए-दमिशक़ अब बिल्कुल तंग आ गए थे और हरक़्ल बादशाह की मदद के मुंतज़िर थे। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने पै दर पै हमले जारी रखे। वे इसी तरह जंग में व्यस्त थे कि उन्होंने देखा कि क़िला की दीवार पर जो रूमी थे वे तुरंत तालियाँ बजा कर नाचने कूदने लगे और ख़ुशी का इज़हार करने लगे। मुस्लमान हैरत से उनको देखने लगे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक जानिब देखा तो एक बड़ा ग़ुबार इस तरफ़ उठता हुआ नज़र आया। इस की वजह से आसमान तारीक नज़र आता था। दिन के वक़्त में भी अंधेरा छाया हुआ दिखाई देता था। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौरन समझ गए कि दमिशक़ वाले की मदद के लिए हरक़्ल बादशाह का लश्कर आ रहा है। थोड़ी ही देर में चंद मुख़बिरों ने इस ख़बर की तसदीक़ भी कर दी कि हमने पहाड़ की घाटी की तरफ़ एक जर्रार का लश्कर देखा है और वे बेशक रोमियों का लश्कर है। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौरन आए और हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को सूरत-ए-हाल से आगाह करते हुए कहा कि मैंने यह इरादा किया है कि समस्त लश्कर लेकर हरक़्ल बादशाह के भेजे हुए लश्कर से मुक़ाबला के लिए जाऊं। लिहाज़ा इस अमर में आपका मश्वरा किया है? हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि यह मुनासिब नहीं है क्योंकि अगर हमने उस जगह को छोड़ दिया तो अहल-ए-दमिशक़ क़िला से बाहर आकर हम से जंग करेंगे। एक तरफ़ से हरक़्ल का लश्कर हमला-आवर होगा और दूसरी तरफ़ से अहल-ए-दमिशक़ हमला करेंगे। हम रोमियों के दो लश्करों के दरमयान मुसीबत में फंस जाऐंगे।

इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा फिर आपकी क्या राय है? हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया तुम एक बहादुर शख़्स का चुनाव करो और उसके साथ एक जमात को दुश्मन के मुक़ाबले के लिए रवाना करो। इसलिए हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत ज़रार बिन अज़ पाँच सौ सवारों का लश्कर दे कर रूमी लश्कर से मुक़ाबले के लिए रवाना किया। एक दूसरी रिवायत में हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो के लश्कर की संख्या पाँच हज़ार भी वर्णन हुई है।

(उद्धरित मरदान-ए-अरब, हिस्सा प्रथम अब्दुल सत्तार हमदानी पृष्ठ 203-204 अकबर बुक सेलर, लाहौर)(फ़ुतूहुल शामी अज़ वाक़दी, भाग 1 पृष्ठ 48)

बहरहाल हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो पाँच सौ सिपाहियों को लेकर या जो भी

लश्कर था उसको लेकर रूमी लश्कर की जानिब रवाना हो गए। कुछ सिपाहियों ने रोमियों का लश्कर देखकर आपसे कहा कि यह लश्कर बहुत बड़ा है और हम सिर्फ पाँच सौ हैं। बेहतर यही है कि हम वापस चलें और अपने लश्कर के साथ मिलकर उस का मुक़ाबला करें। हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा दुश्मन की कसरत से मत घबराओ। ख़ुदा ने बहुत दफ़ा क़िल्लत को कसरत पर ग़ालिब किया है। वह अब भी हमारी मदद करेगा। साथियो वापस जाना तो जिहाद से भागना है जो अल्लाह तआला को पसंद नहीं। क्या तुम अरब की बहादुरी और जाँनिसारी को दाग़ लगाओगे? जिसे वापस जाना हो चला जाए। मैं तो लड़ूंगा। इस्लाम के नाम को बुलंद करूँगा। ख़ुदा मुझे भागते हुए न देखे।

समस्त मुस्लमान एक जुबान हो कर बोले कि हम इस्लाम पर निसार होंगे। शहादत का मर्तबा पाएँगे अर्थात कि हम तैयार हैं जंग के लिए। हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुश हो गए। हुक्म दिया कि दुश्मन पर एक ही बार हमला करके उसे तहस नहस कर दो। मुस्लमान और हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो ने रूमी लश्कर पर नियमित वार किए और बहादुरी से लड़ाई की। रूमी सिपहसालार के बेटे ने हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो पर हमला किया और आपके बाएं बाज़ू पर नेज़ा मारा जिसकी वजह से ख़ून तेज़ी से बहने लगा। एक लम्हा के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस के दिल पर नेज़ा मार कर उसे क़तल कर दिया। आपका नेज़ा उसके सीने में फंस गया और इस का फल टूट गया। रूमी फ़ौज ने आपका नेज़ा ख़ाली देखा तो आपकी तरफ़ टूट पड़े और आपको क़ैद कर लिया।

(उद्धरित इस्लामी जंगें, पृष्ठ 123 से 125अज़ रफ़ीक़ अंजुम मक्की दारुल क़ुतुब लाहौर) (उद्धरित मरदान-ए-अरब, हिस्सा अव्वल अज़ अब्दुल सत्तार हमदानी, पृष्ठ 206 अकबर बुक सेलरज़ लाहौर) क्योंकि हाथ में हथियार नहीं था।

सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब देखा कि हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो क़ैद हो गए हैं तो बहुत ग़मगीं और परेशान हो गए। उन्होंने कई दिफ़ाई हमले किए मगर उनको छुड़ा न सके। हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो की गिरफ़्तारी की ख़बर जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो को पहुंची तो आप बहुत परेशान हुए और साथियों से रूमी लश्कर के विषय में मालूमात लेकर हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो से मश्वरा किया और हमले के विषय में राय ली। हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि दमिशक़ के मुहासरा का माक़ूल इंतेज़ाम करके आप हमला कर सकते हैं। कमांडर क्योंकि उस वक़्त हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो थे। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुहासरा का इंतेज़ाम करने के बाद अपने साथियों के साथ दुश्मन का पीछा किया और उनको हिदायत की कि जैसे ही दुश्मन मिले इस पर अचानक हमला करना। अगर ज़रार को उन लोगों ने क़तल न क्या हो तो शायद हम ज़रार को छुड़ा लाएँगे और अगर ज़रार को शहीद किया हो तो बख़ुदा हम उनसे भरपूर इंतेक़ाम लेंगे। जबकि मुझे उम्मीद है कि अल्लाह हमको ज़रार के विषय में सदमा नहीं देगा। इसी दौरान हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक शहसवार को सुर्ख़ उम्दा घोड़े पर देखा जिसके हाथ में लंबा चमकदार नेज़ा था। इस की वज़ा क़ता से बहादुरी, दानाई और जंगी महारत नुमायां थी। ज़िरह के ऊपर लिबास पहन रखा था। पूरा बदन और मुँह छिपा हुआ था और फ़ौज के आगे आगे था।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने तमन्ना की काश! मुझे मालूम हो जाए कि यह शहसवार कौन है। वल्लाह यह शख़्स निहायत दिलेर और बहादुर मालूम होता है। सब लोग इसके पीछे पीछे जा रहे थे। लश्कर-ए-इस्लाम जब कुफ़्फ़ार के क़रीब पहुंचा तो लोगों ने इस शहसवार को रोमियों पर ऐसे हमला करते देखा जिस तरह बाज़ चिड़ियों पर झपटता है। इस का एक हमला था जिसने दुश्मन के लश्कर में तहलका डाल दिया और मक़्तूलीन के ढेर लगा दिए और बढ़ते-बढ़ते दुश्मन के लश्कर के दरमयान में पहुंच गया। वह चूँकि अपनी जान को हलाकत में डाल चुका था इसलिए दुबारा पल्टा और काफ़िरों के लश्कर को चीरता हुआ अंदर घुसता चला गया। जो सामने आया उस को रेज़ा-रेज़ा कर-के रख दिया। कुछ लोगों का ख़्याल था कि यह शख़्स हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ही हो सकते हैं। राफ़े ने हैरानगी से ख़ालिद से पूछा कि यह शख़्स कौन है? हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया मुझे मालूम नहीं। मैं ख़ुद हैरान हूँ कि यह कौन है।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो लश्कर के आगे खड़े थे कि वही सवार दुबारा रोमियों के लश्कर से निकला। रोमियों का कोई भी सिपाही उसके मुक़ाबिल नहीं आ रहा था और यह तन्हा कई आदमियों से मुक़ाबला करते हुए रोमियों के दरमयान लड़ रहा था। इसी दौरान हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हमला करके उसे कुफ़्फ़ार के घेरे से निकाला और यह शख़्स लश्कर-ए-इस्लाम में पहुंच गया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा : तू ने अपने ग़ुस्सा को अल्लाह के दुश्मनों पर निकाला है। बताओ तुम कौन हो? उस सवार ने कुछ न बताया और फिर जंग के लिए तैयार हो गया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया अल्लाह के बंदे तू ने मुझे और तमाम मुस्लमानों को बेचैनी में डाल दिया है। तू इस क़दर बेपर्वा है। आख़िर तू कौन है हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के इसरार पर उसने जवाब दिया कि मैंने ना-फ़रमानी की वजह से आराज़ नहीं किया, यह नहीं कि मैं नाफ़रमान हूँ इसलिए तुम्हें जवाब नहीं दे रहा बल्कि मुझे शर्म आती है यूँ कि मैं मर्द नहीं हूँ, एक औरत हूँ।

औरतें भी इस बहादुरी का नमूना दिखाती थीं। मुझे मेरे दर्द-ए-दिल ने इस मैदान में उतारा है। ख़ालिद ने पूछा कि कौन सी औरत? उस औरत ने अर्ज़ किया कि ज़रार की बहन खोला बिंत अज़ूर हूँ। भाई की गिरफ़्तारी का पता लगा तो मैंने वही किया जो आपने देखा। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह सुनकर कहा कि हम सबको मुत्तफ़िक़ा हमला करना चाहिए। अल्लाह से उम्मीद है कि वह ज़रार को क़ैद से रिहाई दिला देगा। हज़रत ख़ोलह रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा कि मैं भी हमला में पेश पेश रहूंगी। फिर ख़ालिद ने भरपूर हमला किया। रोमियों के पैर उखड़ गए और रोमियों का लश्कर तित्र बित्तर हो गया। हज़रत राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हो ने शुजाअत के जोहर दिखाए। मुस्लमान एक-बार फिर भरपूर हमले के लिए तैयार हुए थे कि अचानक कुफ़्फ़ार के लश्कर से कुछ सवार इस तरफ़ तेज़ी से अमान मांगते हुए आ गए। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया उनको अमान दे दो और फ़रमाया मेरे पास ले आओ। फिर ख़ालिद ने उनसे पूछा कि तुम लोग कौन हो। उन्होंने कहा कि हम रुम की फ़ौज के लोग हैं और हुम्मस के रहने वाले हैं और सुलह चाहते हैं। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि सुलह तो हुम्मस पहुंच कर होगी। यहां पर समय से पूर्व हम सुलह नहीं कर सकते जबकि तुमको अमान है। जब अल्लाह फ़ैसला करेगा और हम ग़ालिब आएँगे तब वहां पर बात होगी। हाँ यह बताओ कि हमारे एक बहादुर जिसने तुम्हारे सरदार के लड़के को क़तल किया था उस के विषय में तुमको कुछ मालूम है या नहीं? उन्होंने कहा कि शायद आप उनके विषय में पूछते हैं जो नंगे बदन थे और जिन्हों ने हमारे बहुत से आदमियों को मारा और सरदार के बेटे को क़तल किया था। ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया हाँ वही है। उन्होंने कहा जिस वक़्त वे क़ैद हुए और वर्दान के पास पहुंचे तो वर्दान ने उसको सौ सवारों के साथ हम्स हुम्मस रवाना किया ताकि बादशाह के पास पहुंचाया जाए।

यह सुनकर ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो बहुत ख़ुश हुए और हज़रत राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हो को बुला कर फ़रमाया कि तुम रास्तों को अच्छी तरह जानते हो। अपनी मर्ज़ी के जवानों को लेकर हुम्मस पहुंचने से पहले हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो को छुड़ाओ और अपने रब के हाँ अज्र पाओ। हज़रत राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक सौ जवानों को चुन लिया और अभी जाने ही वाले थे कि हज़रत ख़ोलह रज़ियल्लाहु अन्हा ने मिन्नत समाजत करके हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो से जाने की इजाज़त हासिल कर ली और सब लोग हज़रत राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हो की सरकर्दगी में हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो की रिहाई के लिए हुम्मस रवाना हो गए। हज़रत राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हो तेज़ी से चले और एक मुक़ाम पर पहुंच कर आपने-अपने साथियों से कहा कि ख़ुश हो जाओ। दुश्मन अभी आगे नहीं गया और वहां पर अपने एक दस्ते को छुपा दिया। ये लोग इसी हालत में थे कि ग़ुबार उड़ता हुआ दिखाई दिया। हज़रत राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुस्लमानों को चौकन्ना रहने का हुक्म दिया। मुस्लमान तैयार बैठे थे कि रूमी पहुंच गए। हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो उनकी क़ैद में थे और दर्द भरे लहजे में अशआर पढ़ रहे थे कि "हे मुख़्बिर मेरी क़ौम और खोला को यह ख़बर पहुंचा दो कि मैं क़ैदी हूँ और मश्कों में बंधा हुआ हूँ। शाम के काफ़िर और बेदीन मेरे गर्द जमा हैं और तमाम ज़िरह पहने हुए हैं। हे दिल तू ग़म-ओ-हसरत की वजह से मर जा और हे जवाँमर्दी के आँसू मेरे रुख़्सार पर बह जा।" यह शेअर पढ़ रहे थे, उनके अर्थ यह हैं। हज़रत ख़ोलह रज़ियल्लाहु अन्हा ने ज़ोर से आवाज़ दी कि तेरी दुआ क़बूल हो गई। अल्लाह की

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

मदद आ गई। मैं तेरी बहन खोला हूँ और यह कह कर उसने ज़ोर से तकबीर बुलंद करके हमला कर दिया और दीगर मुस्लमान भी तकबीर कहते हुए हमला-आवर हुए।

मुस्लमानों ने इस दस्ते पर क़ाबू पा लिया। सबको क़तल कर दिया गया। हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो को अल्लाह तआला ने रिहाई दिलाई और माल-ए-ग़नीमत मुस्लमानों को मिल गया। हज़रत ख़ोलह रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने हाथों से भाई की रस्सियाँ खोल दीं और सलाम किया। हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी बहन को शाबाश दी और ख़ुश-आमदीद कहा। एक लंबा नेज़ा हाथ में लिया और एक घोड़े पर सवार हुए। ख़ुदा का शुक्र अदा किया। यहां यह ख़ुशी हुई और वहां दमिशक़ में हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने सख़्त हमला करके वर्दान को शिकस्त-ए-फ़ाश दी। वे लोग भाग गए और मुस्लमानों ने उनका पीछा किया। वहां हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो और दीगर मुस्लमानों से मुलाक़ात हुई। फ़तह की ख़बर हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को भेज दी। अब मुस्लमानों ने यक़ीन कर लिया कि दमिशक़ फ़तह होने वाला है।

(उद्धरित फ़ुतूहात शाम अज़ फ़ज़ल मुहम्मद यूसुफ़ पृष्ठ 75-81 मकतबा ईमान-ओ-यक़ीन)

दूसरी तरफ़ इस्लामी लश्कर दमिशक़ में मुक़ीम था और क़िला का मुहासरा जारी था कि बसरा से हज़रत अबद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए और इत्तला दी कि रोमियों का नब्बे हज़ार का लश्कर बमुक़ाम अजनादीन जमा हुआ है। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो से मश्वरा किया तो उन्होंने कहा कि हमारा लश्कर मुल्क-ए-शाम में मुतफ़र्रिक़ मुक़ामात में मुंतशिर है। इसलिए इन समस्त को ख़त लिख दो कि वे हमें अजनादीन में आ मिलें और हम भी अब क़िला दमिशक़ का मुहासरा तर्क करके अजनादीन की जानिब कूच करेंगे।

(उद्धरित मरदान-ए-अरब हिस्सा अव्वल अज़ अब्दुल लस्तार पृष्ठ 214 अकबर बुक सेलरज़ लाहौर)

हरक़्ल को वर्दान की शिकस्त की ख़बर पहुंच चुकी थी तथा उसके बेटे के क़तल होने का मुफ़स्सिल हाल मालूम हो चुका था। इसलिए हरक़्ल ने इस को ख़ूब डाँट डपट करते हुए लिखा कि मुझे ख़बर मिली है कि नंगे भूखे अरबों ने तुझे शिकस्त दे दी है और तेरे बेटे को क़तल किया है। न मसीह ने इस पर रहम किया और न तुम पर। अगर तेरी बहादुरी और शमशीर ज़नी का चर्चा न होता तो मैं तुझे क़तल कर देता। ख़ैर अब जो हुआ सो हुआ मैं ने अजनादीन की तरफ़ नव्वे हज़ार की फ़ौज रवाना की है तुझे उसका सरदार मुक़र्रर करता हूँ।

(उद्धरित फ़ुतूहात शाम अज़ फ़ज़ल-ए-मुहम्मद यूसुफ़ ज़ई, पृष्ठ 81 मकतबा ईमान-ओ-यक़ीन)

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने दमिशक़ का मुहासरा ख़त्म करके अजनादीन की तरफ़ लश्कर को रवाना होने का हुक्म दिया। हुक्म मिलते ही मुस्लमानों ने फ़ौरन ख़ेमे उखेड़ कर बाक़ी माल अस्बाब ऊंटों पर लादना शुरू किया। माल-ए-ग़नीमत के ऊंटों को और माल-ओ-अस्बाब के ऊंटों को औरतों और बच्चों के साथ लश्कर के पीछे की जानिब रखा और बाक़ी सवारों को लश्कर के आगे रखा। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मेरी राय यह है कि मैं औरतों और बच्चों के क़ाफ़िला के साथ लश्कर के पीछे रहूं, हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को कहा, और आप लश्कर के आगे रहें। हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि मुम्किन है कि वर्दान अपना लश्कर लेकर अजनादीन से दमिशक़ की तरफ़ रवाना हुआ हो और उससे आमना सामना हो जाए। अगर तुम लश्कर के आगे रहोगे तो तुम उनको रोक सकोगे और मुक़ाबला कर सकोगे। इसलिए तुम आगे रहो और मैं पीछे रहता हूँ। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा आपकी राय मुनासिब है। मैं आपकी राय और तजवीज़ के ख़िलाफ़ नहीं करूँगा। जब इस्लामी लश्कर दमिशक़ का मुहासरा तर्क करके रवाना हुआ तो लश्कर को कूच करते देखकर अहल-ए-दमिशक़ ख़ुशी से उछलने कूदने लगे और तालियाँ बजा कर अपनी ख़ुशी का इज़हार करने लगे। इस्लामी लश्कर के कूच के विषय में दमिशक़ वाले ने मुख़्तलिफ़ आरा ज़ाहिर कीं। किसी ने कहा कि अजनादीन में हमारे अज़ीम लश्कर के जमा होने की ख़बर सुनकर मुस्लमान मुल्क-ए-शाम में अपने दूसरे लश्कर के पास जमा होने गए हैं। किसी ने कहा कि मुहासरा से तंग आकर किसी और मुक़ाम पर लश्कर कशी करने जा रहे हैं और कुछ ने तो यहां तक कहा कि मुल्क हिजाज़ की तरफ़ भाग कर जा रहे हैं, वापस जा रहे हैं।

(उद्धरित मरदान-ए-अरब हिस्सा अव्वल अज़ अब्दुल सत्तार हमदानी 216-217 अकबर बुक सेलरज़ लाहौर)

अहल-ए-दमिशक़ से जितने भी लोग थे वे एक शख़्स के पास जमा हो गए जिसका नाम बूलस था। और वे इस से पूर्व किसी भी जंग में सहाबा के सामने नहीं आया था। यह शख़्स हरक़्ल का निहायत मोतमिद और आला दर्जा का तीर-अंदाज़ था। दमिशक़ वाले ने उसको अमीर बनाया और हर किस्म का लालच देकर जंग के लिए आमादा किया। तथा उन्होंने इस बात की कसमें खाईं कि वे मैदान-ए-जंग छोड़कर नहीं भागेंगे और जो भी उनमें से मैदान छोड़ेगा तो आपको इख़्तेयार होगा कि उसे अपने हाथ से क़तल कर दें। यह अह्द-ओ-पैमान जब मुकम्मल हो गया और बूलस घर में दाख़िल हो कर ज़िरह पहनने लगा तो बीवी ने पूछा कि कहाँ जाते हो। बूलस ने कहा कि दमिशक़ वालों ने मुझे अपना अमीर बनाया है। अब अरबों के साथ लड़ने जा रहा हूँ।

बीवी ने उससे कहा कि ऐसा मत करो बल्कि घर में बैठे रहो। तुम में अरबों से लड़ने की ताक़त नहीं है। उनसे ख़्वाह-मख़ाह मत लड़ो। मैंने आज ही ख़ाब में देखा है कि तुम्हारे हाथ में कमान है और हवा में चिड़ियों का शिकार कर रहे हो। कुछ चिड़ियां ज़ख़मी हो कर गिर गईं परन्तु फिर उठकर उड़ने लगीं। मैं ताज्जुब में पड़ गई कि ख़ाब में ही देखा कि अचानक ऊपर से उक़ाब आ गए। एक नहीं कई उक़ाब आ गए और तुम और तुम्हारे साथियों पर ऐसे टूट पड़े कि सबको नीस्त-ओ-नाबूद कर दिया। बूलस ने कहा तू ने मुझे भी ख़ाब में देखा था। उसने कहा हाँ। अक़ाब ने ज़ोर से तुझे ठोनग मारी और तू बेहोश हो गया था। बूलस ने उसकी बातें सुनके अपनी बीवी को थप्पड़ मारा और कहा कि तेरे दिल में अरबों का ख़ौफ़ बैठ गया है। ख़ाब में भी वही ख़ौफ़ है। घबराओं मत! मैं अभी उनके अमीर को तेरा ख़ादिम और उसके साथियों को बकरियों और ख़िंज़ीरों का चरवाहा बना दूँगा।

बूलस निहायत तेज़ी से छः हज़ार सवार और दस हज़ार पैदल लश्कर लेकर मुस्लमानों के पीछे उनके मुक़ाबला के लिए निकल गया और इस्लामी फ़ौज की औरतों, बच्चों, माल मवेशी और अबू उबैदा के एक हज़ार लश्कर का पीछा किया। मुस्लमान भी मुक़ाबले के लिए तैयार हो गए। देखते ही देखते कुफ़्फ़ार पहुंच गए। बूलस सबसे आगे था। उसने एक दम छः हज़ार सिपाहियों के साथ अबू उबैदा पर हमला किया। बूलस का भाई बुत पैदल फ़ौज के साथ औरतों की तरफ़ बढ़ा और कुछ औरतें गिरफ़्तार करके दमिशक़ की तरफ़ वापिस पल्टा। एक जगह पर पहुंच कर अपने भाई के इंतेज़ार में बैठ गया। हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह मुसीबत-ए-नागहानी देखकर फ़रमाया कि ख़ालिद की राय सही थी कि वह लश्कर के पीछे रहेंगे। उधर औरतें और बच्चे चला रहे थे। उधर एक हज़ार मुस्लमानों ने बहादुरी से मुक़ाबला किया। बूलस ने हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो पर बार-बार हमला किया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी शदीद मुक़ाबला किया। हज़रत सहल तेज़-रफ़्तार घोड़े पर सवार हो कर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास पहुंचे और सारा क़िस्सा सुनाया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन पढ़ा। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हो और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो को एक एक हज़ार लश्कर देकर रवाना किया ताकि बच्चों और औरतों की हिफ़ाज़त हो जाए। इसके बाद हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो को एक हज़ार सवार देकर रुख़स्त किया और ख़ुद भी लश्कर लेकर दुश्मन की तरफ़ चले। उधर हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो बूलस के साथ मसरूफ़-ए-जंग थे। इतने में मुख़्तलिफ़ इलाक़ों से आने वाले मुस्लमानों के लश्कर पहुंच गए। उन्होंने ऐसा हमला किया कि दमिशक़ से आकर हमला करने वाले रोमियों को अपनी ज़िल्लत-ओ-ख़ारी का यक़ीन हो गया। हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो आग के शोलों की तरह बूलस की तरफ़ बढ़े। उसने जब आपको देखा तो काँप उठा और पहचान लिया। बूलस घोड़े से उतर कर पैदल भागने लगा। हज़रत ज़रार

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी उसका पीछा किया और उसको ज़िंदा पकड़ लिया और क़ैद कर लिया। इस जंग में कुफ़्फ़ार के छः हज़ार आदमियों में से बमुश्किल सौ आदमी ज़िंदा बच्चे थे। हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो परेशान थे क्योंकि हज़रत खोला रज़ियल्लाहु अन्हा भी क़ैद हो चुकी थीं। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि घबराओ नहीं हमने उनके ऐसे आदमी पकड़े हुए हैं जिनके बदले में वे हमारे क़ैदी आसानी से रिहा कर देंगे।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने दो हज़ार सिपाहियों को अपने साथ लिया और बाक़ी समस्त अफ़्वाज को हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो के हवाले कर दिया ताकि औरतों की हिफ़ाज़त हो जाए और ख़ुद क़ैदी महिलाओं की तलाश में निकल गए। आप जल्दी जल्दी चल कर उस जगह पहुंचे जहां पर दुश्मन मुस्लमान औरतों को क़ैद करके ले गए थे। आपने देखा कि ग़ुबार उड़ रहा है। आपको ताज्जुब हुआ कि यहां लड़ाई क्यों हो रही है। पता करने पर मालूम हुआ कि बूलस का भाई बुत औरतों को गिरफ़्तार करके नहर के पास भाई के इंतेज़ार में रुक गया था और अब वे औरतों को आपस में बांटने लगे थे। बतरस ने हज़रत ख़ोलह रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में कहा कि यह मेरी है। उन्होंने औरतों को एक ख़ेमा में क़ैद कर दिया और ख़ुद आराम करने लगे और उन्हें बूलस का इंतेज़ार भी था। इन औरतों में से अक्सर बहादुर और अनुभवी शहसवार औरतें भी थीं। वे हर किस्म की जंग जानती थीं। यह आपस में जमा हुईं और हज़रत ख़ोलह रज़ियल्लाहु अन्हा ने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा कि हे क़बीला की बेटियों! और हे क़बीला तब्बे की यादगारो क्या तुम इस पर राज़ी हो कि रूमी कुफ़्फ़ार तुमको लौंडियां बनाएँ? कहाँ गई तुम्हारी शुजाअत और क्या हुई तुम्हारी वह ग़ैरत जिसका वर्णन अरब मजलिसों में हुआ करता था? अफ़सोस मैं तुम्हें ग़ैरत से अलैहदा और शुजाअत और बहादुरी से ख़ाली पा रही हूँ। इस आने वाली मुसीबत से तो तुम्हारी मौत अफ़ज़ल है।

यह सुनकर एक सहाबिया ने कहा हे ख़ोलह रज़ियल्लाहु अन्हा! तू ने जो कुछ वर्णन किया है बेशक दरुस्त है लेकिन यह बताओ कि हम क़ैद में हैं। हमारे हाथ में नेज़ा तलवार नहीं है। हम क्या कर सकती हैं! न घोड़ा है न असलाह है क्योंकि अचानक हमको क़ैद कर लिया गया है। हज़रत ख़ोलह रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि होश करो। ख़ेमों के सतून तो मौजूद हैं। हमें चाहिए कि उन्हें उठा कर उन बदबख़्तों पर हमला करें। आगे मदद अल्लाह फ़रमाएगा। या हम ग़ालिब आ जाऐंगे वर्ना शहीद तो हो जाएँगी। इस पर हर ख़ातून ने ख़ेमा की एक-एक लकड़ी उठाई। हज़रत ख़ोलह रज़ियल्लाहु अन्हा एक लकड़ी कंधे पर रखकर आगे हुईं।

हज़रत ख़ोलह रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने अधीन महिलाओं से फ़रमाया कि ज़ंजीर की कड़ियों की तरह एक साथ हो जाओ। मुतफ़र्रिक़ न होना वर्ना सब क़तल हो जाओगी। इसके बाद हज़रत ख़ोलह रज़ियल्लाहु अन्हा ने आगे बढ़कर एक रूमी काफ़िर को मार कर क़तल किया। रूमी लोग इन औरतों की जुर्रत-ओ-बहादुरी देखकर हैरान हो गए। बतरस ने बदबख़्तो! ये क्या कर रही हैं। एक सहाबिया ने जवाब दिया कि आज हमने इरादा कर लिया है कि इन लकड़ियों से तुम्हारे दिमाग़ दरुस्त कर दें और तुम्हें क़तल कर के अपने इस्लाफ़ की इज़्ज़तों की हिफ़ाज़त करें। बतरस ने कहा कि उनको ज़िंदा पकड़ लो और खोला को ज़िंदा पकड़ने का ख़ास ख़्याल रखो। चारों तरफ़ से तीन हज़ार रूमी हलक़ा बांध कर खड़े थे परन्तु कोई शख़्स औरतों तक नहीं आ सकता था। अगर वे आगे बढ़ता तो ये औरतें उनके घोड़ों और फिर उनको मार देती थीं। इस तरह तीस सवारों को इन औरतों ने मौत के घाट उतार दिया।

बतरस ये देखकर आग बगूला हो गया। घोड़े से नीचे उतरा। अपने साथियों के साथ हो कर तलवारों से हमला किया किन्तु ये औरतें एक जगह इकट्ठी हुईं और सब का मुक़ाबला किया और कोई क़रीब न आ सका। हज़रत ख़ोलह रज़ियल्लाहु अन्हा को मुख़ातब करते हुए बतरस ने कहा कि हे खोला अपनी जान पर रहम करो। मैं तुम्हारी क़दर करता हूँ। मेरे दिल में भी तेरे लिए बहुत कुछ है। क्या तुम्हें ये पसंद नहीं कि मैं बादशाह जैसा आदमी तेरा मालिक बनू और मेरी सारी जायदाद तुम्हारी जायदाद हो जाए। हज़रत ख़ोलह रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया हे काफ़िर बद-बख़्त ख़ुदा की क़सम अगर मेरा बस चले तो अभी तेरा सर लकड़ी से तोड़ दूं। खुदा की कसम मुझे तो यह भी पसंद नहीं कि तू मेरी बकरियां और ऊंट चराए और कहाँ तू मेरी बराबरी का दावा करे। इस पर बतरस ने लश्कर से कहा कि इन सबको क़तल कर दो। लश्कर वाले नए सिरे से तैयार हो रहे थे और इबतेदाई हमला करने वाले थे कि मुस्लमान हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो की सरकर्दगी में वहां पहुंच गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो को तमाम हालात-ओ-वाक़ियात का इलम हुआ। औरतों की बहादुरी और मुक़ाबले से मुस्लमान बहुत ख़ुश हुए और फिर पूरे लश्कर ने कुफ़्फ़ार के इर्द-गिर्द दायरा डाल दिया और एक साथ हमला किया। हज़रत ख़ोलह रज़ियल्लाहु अन्हा ने चिल्ला कर कहा अल्लाह की मदद आ है! अल्लाह ने मेहरबानी कर दी है जब बतरस ने मुस्लमानों को देखा तो परेशान हो गया और भागने लगा मगर भागने से पहले उसने दो मुस्लमान शहसवारों को अपनी तरफ़ आते देखा। उनमें से एक ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो र दूसरे हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो थे। ज़रार ने उसको एक नेज़ा मारा। वह घोड़े से गिरते गिरते बच्चा। फिर ज़रार ने दूसरा वार किया और वह ढेर हो गया। मुस्लमानों ने बहुत से रोमियों को क़तल किया। जो बच गए वे दमिशक़ भाग गए।

जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो वापिस लौटे तो बूलस को बुलाया और उसको इस्लाम पेश किया और फ़रमाया इस्लाम क़बूल करो वर्ना तेरे साथ वही सुलूक किया जाएगा जो तेरे भाई के साथ किया गया। बूलस ने कहा मेरे भाई के साथ क्या हुआ है। ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया उस को क़तल किया है। बूलस ने अपने भाई का अंजाम देखकर कहा कि अब ज़िंदगी का कोई मज़ा नहीं है। मुझे भी भाई के साथ मिला दो। इसलिए उसे भी क़तल कर दिया गया। (उद्धरित फ़ुतूहात शाम अज़ फ़ज़ल मुहम्मद ज़ई, पृष्ठ 82 से 89 मकतबा ईमान-ओ-यक़ीन)

बहरहाल इस्लामी लश्कर फिर अजनादीन के मुक़ाम पर जमा हो गए। यह तफ़सील पहले वर्णन हो चुकी है। दमिशक़ का यह दूसरा मुहासरा हुआ। पहले तो छोड़ आए थे। अब इस जंग के बाद दुबारा दमिशक़ के मुहासरे के बारे में लिखा है कि अजनादीन की फ़तह के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस्लामी लश्कर को दमिशक़ की जानिब दुबारा कूच करने का हुक्म दिया। अहल-ए-दमिशक़ को अजनादीन में रूमी लश्कर की शिकस्त की इत्तिला पहले ही मिल चुकी थी लेकिन जब उन्हें यह ख़बर मिली कि इस्लामी लश्कर अब दमिशक़ की तरफ़ आ रहा है तो वे बहुत घबराए। दमिशक़ के अतराफ़ में बसने वाले भाग कर क़िला में पनाह गज़ीन हो गए और क़िला में काफ़ी तादाद में आहार और सामान जमा कर लें ताकि अगर इस्लामी लश्कर का मुहासरा लंबा हो जाए तो ज़ख़ीरा ख़त्म न हो। इस के इलावा हथियार और सामान-ए-जंग भी इकट्ठा कर लिया। क़िला की दीवारों पर मंजनीक, पत्थर, ढाल, तीर, कमान इत्यादि सामान पहुंचा दिया ताकि क़िला की दीवार से मुहासरा करने वालों पर हमला किया जाए। इस्लामी लश्कर ने दमिशक़ के क़रीब पड़ाव किया। फिर इस्लामी लश्कर ने आगे बढ़कर क़िला का मुहासरा कर लिया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने दमिशक़ के तमाम दरवाज़ों पर सरदारों को उनके लश्कर समेत मुतय्यन कर दिया।

(उद्धरित मरदान-ए-अरब हिस्सा अव्वल अज़ अब्दुल सत्तार पृष्ठ 247 अकबर बुक सेलरज़ लाहौर)

इस वक़्त दमिशक़ का हाकिम तोमा। दमिशक़ के अमीर, उमरा और दानिशमंद लोगों ने तोमा को मशवरा दिया कि हमारे पास इस्लामी लश्कर से मुक़ाबले की ताक़त नहीं। इसलिए या तो हरक़्ल से मदद तलब करो या फिर मुस्लमानों से सुलह कर लो। जो वे तलब करें उन्हें देकर अपनी जान बचाओ। इस पर तोमा तकब्बुर और ग़रूर से कहा कि मैं अरबों की कोई हैसियत नहीं समझता। मैं हरक़्ल-ए-आज़म का दामाद और जंग का माहिर हूँ। मेरे होते हुए मुस्लमानों को शहर में पांव रखने की जुर्रत नहीं होगी।

सरदारों के समझाने पर तोमा ने यह कह कर उन्हें तसल्ली दी कि अनक़रीब हरक़्ल की तरफ़ से एक बड़ा लश्कर हमारी मदद के लिए आ रहा है। तोमा ने हर तरफ़ से मुस्लमानों पर शिद्दत से हमले का हुक्म दिया। इन हमलों के दौरान कई मुस्लमान ज़ख़मी और शहीद हुए। हज़रत अबअन् बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हो को भी एक ज़हर-आलूद तीर लगा। तीर निकालने के बाद उन्होंने ज़ख़म पर इमामा बांध लिया लेकिन थोड़ी ही देर में ज़हर उनके जिस्म में सरायत कर गया और वह चक्कर खा कर गिर गए और वहीं कुछ देर बाद-ए-जाम शहादत नोश कर गए। हज़रत अबअन रज़ियल्लाहु अन्हो का निकाह अजनादीन की जंग के दौरान हज़रत उम्म-ए-अबअन् से हुआ था और उनके हाथ की मेहंदी का रंग और सिर में इतर की ख़ुशबू बाक़ी थी अर्थात बिल्कुल ताज़ा शादी थी। हज़रत उम अबअन रज़ियल्लाहु अन्हा का शुमार अरब की इन बहादुर महिलाओं में होता था जो जिहाद करने में पेश पेश रहती थीं। जब उनको अपने पति की शहादत की सूचना मिली तो वह भागती हुई और ठोकरें खाती हुई आईं और अपने ख़ावंद की लाश के पास सब्र-ओ-इस्तक़लाल का एक पैकर बन कर खड़ी हो गईं। अपनी ज़बान से नाशुक्री का एक शब्द भी नहीं निकाला और अपने ख़ावंद की जुदाई में चंद अशआर कहे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनकी नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ाया। तदफ़ीन के बाद हज़रत उम अबअन रज़ियल्लाहु अन्हा अपने ख़ेमे की तरफ़ एक अज़्म-ए-मोहकम

और पुख़्ता इरादे के साथ गईं। अपने हथियार थामे और अपने चेहरे पर कपड़ा बाँधा और बाब तोमा पर पहुंच गईं जहां उनके ख़ावंद शहीद हुए थे। बाब तोमा में उस वक़्त सख़्त लड़ाई जारी थी। हज़रत उम अबअन रज़ियल्लाहु अन्हा उन मुस्लमानों में शामिल हो कर सख़्त लड़ाई लड़ती रहीं और अपने तीरों से कई रोमियों को ज़ख़मी और मौत के घाट उतार दिया और अंततः लड़ाई के दौरान मौक़ा पा कर तोमा के मुहाफ़िज़ का निशाना लिया जिसके हाथ में सलीब-ए-आज़म थी।

यह सलीब सोने की बनी हुई थी और इस में क़ीमती जवाहर जड़े हुए थे। सलीब-ए-आज़म उठाने वाला शख़्स रोमियों को जंग की तरग़ीब देता था और सलीब के वसीले से फ़तह-ओ-कामयाबी की दुआ मांगता था। हज़रत उम्म-ए-अबअन रज़ियल्लाहु अन्हा का तीर जैसे ही इस शख़्स को लगा उस के हाथ से सलीब गिर गई और मुस्लमानों के हाथ लग गई।

तो जब देखा कि सलीब मुस्लमानों के क़बज़ा में चली गई है तो अपने साथियों के साथ उसको वापस लेने के लिए नीचे उतर आया और दरवाज़ा खोल कर मुस्लमानों से मुक़ाबला शुरू कर दिया। इस दौरान क़िला के ऊपर से रोमियों ने भी सख़्त हमले करने शुरू कर दिए। इस दौरान हज़रत उम अबअन रज़ियल्लाहु अन्हा ने मौक़ा देखकर तोमा की आँख का निशाना लेकर तीर चलाया और उसकी आँख हमेशा के लिए अंधी कर दी। इस पर तोमा को अपने साथियों समेत पीछे हटना पड़ा और उन्होंने क़िला में दाख़िल हो कर दरवाज़े बंद कर लिए। तो यह हालत देखकर अहल-ए-दमिशक़ ने कहा कि इसी लिए हमने कहा था कि इन अरबों से मुक़ाबला करना हमारे बस की बात नहीं। इसलिए अरबों से मुसालहत की कोई सूरत इख़्तेयार करनी चाहिए। इस पर तोमा ग़ज़बनाक हो गया और अपने साथियों से कहा कि अपनी आँख के बदले में उनकी एक हज़ार आँखें फोड़ डालूँगा।

(उद्धरित मरदान-ए-अरब हिस्सा अव्वल अज़ अब्दुल सत्तार पृष्ठ 248 से 254 अकबर बुक सेलरज़ लाहौर)

अहल-ए-दमिशक़ को हम्स से बीस हज़ार फ़ौज की मदद आने की तवक़्क़ो थी (सय्यदना उम्र बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ अली अलसलाबी, पृष्ठ : 724) मगर इस्लामी फ़ौज ने यह तदबीर की कि फ़ौज के एक दस्ते को दमिशक़ के रास्ते पर मुक़र्रर कर दिया। इस तरह हुम्मस से आने वाली फ़ौज को वहीं रोक लिया गया। मुस्लमानों ने दमिशक़ का सख़्त मुहासरा किए रखा। इस में हमलों, तीर-अंदाज़ी और मंजनीकों से दुश्मन को ख़ूब परेशान करते रहे। अहल-ए-दमिशक़ को जब यक़ीन हो गया कि उनको इमदाद नहीं पहुंच सकती और उनमें कमज़ोरी और बुज़दिली पैदा हो गई तो उन्होंने मज़ीद जद्द-ओ-जहद तर्क कर दी और मुस्लमानों के दिलों में उनको ज़ेर करने का जज़बा बढ़ गया।

(उद्धरित अलतिबरी, भाग 2 पृष्ठ 357-358 दारुल क़ुतुब अलालमी बेरूत 2012 ई.)

अहल-ए-दमिशक़ का ख़्याल था कि सर्दीयों की शिद्दत में मुस्लमान तवील मुहासरा की तकलीफों को बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे लेकिन मुस्लमानों ने हालात का निहायत बहादुरी से मुक़ाबला किया। दमिशक़ के अतराफ़ के ख़ाली मकानात को मुस्लमानों ने राहत-ओ-आराम के लिए प्रयोग किया। हफ़तावारी इंतेज़ाम के मुताबिक़ बारी-बारी जो फ़ौज महाज़ पर होती वह आकर आराम करती और जब वह चली जाती तो दूसरी फ़ौज आकर आराम करती और दरवाज़ों पर मुतय्यन इन फ़ौजी दस्तों के पीछे उनकी हिमायत और निगरानी के लिए दूसरी फ़ौज मुक़र्रर होती। इस तरह तवील से तवील मुहासिरे पर भी क़ाबू पाना आसान हो गया लेकिन मुस्लमानों ने इसी पर बस नहीं किया बल्कि दुश्मन की मुनज़्ज़म रुकावटों को तोड़ने के लिए उनकी मैदानी तहक़ीक़ात और जंगी चालें अपना काम करती रहें और रुकावटों के इस मुनज़्ज़म और तवील सिलसिला में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो एक ऐसे मुनासिब मुक़ाम के इंतेख़ाब में कामयाब हो गए जहां से दमिशक़ में दाख़िल होना मुम्किन था।

यह दमिशक़ का सबसे बेहतर ख़ित्ता था। इस मुक़ाम पर ख़ंदक़ का पानी काफ़ी गहरा था और वहां से दाख़िल होना काफ़ी दुशवार तलब काम था। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो ने दमिशक़ में दाख़िल होने की तदबीर यह निकाली कि चंद रस्सियों को इकट्ठा किया ताकि फ़सील पर चढ़ने और दमिशक़ में उतरने के लिए उनमें फंदा लगा कर सीढ़ीयों का काम लिया जा सके। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो को किसी ज़रीया से यह ख़बर मिल गई थी कि दमिशक़ के बतरीक़, रूमी फ़ौज के दस हज़ारी लश्कर के क़ायद के हाँ बच्चे की विलादत हुई है, एक कमांडर के हाँ बच्चे की विलादत हुई है और सारे लोग जिनमें उसके मुहाफ़िज़ सिपाही भी थे दावत में मशग़ूल हैं। इसलिए वह सब ख़ूब खा पी कर मस्त हो कर सो गए और अपनी-अपनी ज़िम्मेदारियों से ग़ाफ़िल हो गए।

इसी दौरान हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो अपने चंद साथियों के साथ मशकीज़ों के सहारे ख़ंदक़ उबूर करके फ़सील तक पहुंच गए और रस्सियों के फंदे लगा कर उन्हें बतौर सीढ़ी के फ़सील पर मज़बूती से फंसा दिया और असंख्य रस्सियाँ फ़सील से लटका दें। इस पर रस्सियों के सहारे काफ़ी ज़्यादा संख्या में मुस्लमान फ़सील पर चढ़ गए और अंदर उतर गए और दरवाज़ों तक पहुंच गए। दरवाज़ों की कुंडियों को तलवार से काट कर अलग कर दिया। इस तरह इस्लामी फ़ौजें दमिशक़ में दाख़िल हो गईं।

(सय्यदना उम्र बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ अली मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 727 -728 मकतबा अलफ़रकान मुज़फ़्फ़र गढ़)

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो की फ़ौज मशरिक़ी दरवाज़े पर क़ाबिज़ हो गई तो रोमियों ने घबराहट में हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो से मग़रिबी दरवाज़े पर सुलह की दरख़ास्त की हालाँकि पहले मुस्लमानों की तरफ़ से सुलह की दरख़ास्त को अस्वीकृत कर चुके थे और जंग पर ब-ज़िद थे। हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़ुश-दिल्ली से सुलह को मंज़ूर कर लिया। इस पर रोमियों ने क़िला के दरवाज़े खोल दिए और मुस्लमानों से कहा कि जल्द आओ और हमें इस दरवाज़े के हमला आवरों अर्थात हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो से बचाओ। नतीजा यह हुआ कि समस्त दरवाज़ों से मुस्लमान सुलह के साथ शहर में दाख़िल हुए और हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो अपने दरवाज़े से लड़ाई करते हुए शहर में दाख़िल हुए। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो और बाक़ी चारों इस्लामी उमरा शहर के वस्त में एक दूसरे से मिले। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो ने यदि दमिशक़ का कुछ हिस्सा लड़ कर फ़तह किया था लेकिन चूँकि हज़रत ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सुलह मंज़ूर कर ली थी इसलिए मफ़्तूहा इलाक़े में भी सुलह की शराइत तस्लीम की गईं।

(तारीख़ तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 357 - 358 दारुल क़ुतुब अलालमी बेरूत 2012 ई.)(उल-फ़ारूक़ अज़ शिबली नुमानी, पृष्ठ 106-107 मतबूआ इदारा इस्लामियात 2004 ई.)

यहां यह वाज़ेह हो कि दमिशक़ की फ़तह को कुछ इतिहासकार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अहद-ए-ख़िलाफ़त में वर्णन करते हैं लेकिन दमिशक़ का यह मार्का हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के अहद-ए-ख़िलाफ़त में शुरू हो चुका था। जबकि उस की फ़तह की ख़बर जब मदीना भेजी गई तो उस वक़्त हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात हो चुकी थी। तो यह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने की आख़िरी जंग थी।

आइन्दा इंशा-ए-अल्लाह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़िंदगी के जो बाक़ी पहलू हैं वे वर्णन होंगे। इस वक़्त मैं चंद मरहूमीन का वर्णन भी करना चाहता हूँ।

पहला वर्णन है आदरणीय उम्र अबू अरकूब साहिब जो जुनूबी फ़लस्तीन के सदर जमाअत थे। पंद्रह अगस्त को सत्तर साल की उम्र में उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उम्र अबू अरकूब साहिब 2010 ई. में एम.टी.ए अल् अरबिया के ज़रीया जमाअत से परिचय हुए। इस बारे में उन्होंने कहा कि जब मैंने सबसे पहले एम.टी.ए. देखा तो महसूस किया कि बेशक ये लोग नेक और सालह हैं। मैं एक तरफ़ आलम-ए-इस्लाम को क़तल-ओ-ग़ारत, डाका, चोरी और बाहमी मुनाफ़िरत की हालत में देखता हूँ और दूसरी तरफ़ जमाअत-ए-अहमदिया सिला रहमी की तालीम देती है और तहज्जुद पढ़ने और क़ुरआन-ए-मजीद की तिलावत करने की तलक़ीन करती है जिससे में काफ़ी मुतास्सिर हुआ और मैंने कहा कि यही सच्ची जमाअत है जिसकी पैरवी हम पर वाजिब है। फिर कहते हैं इस्तेख़ारे के बाद मुझे यक़ीन हो गया। फिर मैंने ख़ाब भी एक देखी थी कि यही सच्ची जमाअत है और कहते हैं कि उन्होंने यह अह्द किया कि मैं वफ़ात तक इस जमाअत से मुंसलिक रहूँगा। हर मुश्किल वक़्त में मरहूम बहुत साबित-क़दम रहते थे। मरहूम कहा करते थे कि जब तक मैं ज़िंदा हूँ तो अपने अह्द पर साबित-क़दम रहूँगा। उनकी बैअत के बाद उनकी पत्नी आदरणीया ने स्वप्न में देखा कि चंद अहमदी लोग हैं। आदरणीय उम्र साहिब को अपने घर में एक कमरे में ले गए। उन्होंने उनको नहलाया और उनके सीने को खोल कर साफ़ किया और मुझे कहा कि देखो हम उनको बेहतरीन हालत में वापस ले आए हैं। ख़िलाफ़त से बे-इंतिहा मुहब्बत करने वाले थे और बड़ी दुआएं किया करते थे। मरहूम जमाअत से इख़लास का ताल्लुक़ रखने वाले थे। अपने घर के एक हिस्सा को जो निचली मंज़िल थी जमाअत के लिए वक़्फ़ किया हुआ था। जमाअत अहमदिया जुनूबी फ़लस्तीन मरहूम के मकान में नमाज़-ए-जुमा, ईदैन

और इज्लासात के लिए जमा होती और उनके बेटे ने कहा कि मरहूम की वसीयत है कि यह हिस्सा जमाअत के लिए वक़्फ़ रहेगा। उनके मुख़ालेफ़ीन उनको बिमारी के दिनों में कहते थे जमाअत अहमदिया से तौबा करो बिमारी हट जाएगी लेकिन मरहूम इसके बावजूद उनसे तब्लीग़ी मुबाहिसा किया करते थे और एक शख़्स जो बहुत ज़्यादा बढ़ बढ़के मुख़ालिफ़त में बोलने वाला था इस से मुबाहिसा किया और ऐसा लाजवाब कर दिया कि इस को कोई जवाब नहीं सूझा। जब उनके बीमारी के दिन गुज़र रहे थे तो बीमारी की शिद्दत की वजह से अगले दिन मरहूम को आई. सी. यू में मुंतक़िल होना पड़ा। मुबाहिसे के दौरान मरहूम के बेटे ने उस मुल्ला से कहा जो बहुत ज़्यादा बढ़ बढ़के उनसे बेहस करने वाला था कि वालिद साहिब को छोड़ दो। यह साहब-ए-तजुर्बा हैं। तुम उनको नहीं मना सकते। बहरहाल बेटा कहता है कि मरहूम ने मौत से पहले यह नसीहत की थी कि मेरी मौत पर उदास न होना। फिर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो का क़ौल दोहराते रहे कि غَدًا أَلْقَى الْأَحِبَّةَ مُحَمَّدًا وَصَحْبَهُ अर्थात कल मैं अपने प्यारे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से मिलूँगा।

(شرح الزرقانی علی المواهب اللدنیة भाग 1 पृष्ठ 499 इस्लाम हमज़, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

मरहूम बहुत हरदिलअज़ीज़ और एक प्यारी शख़्सियत के मालिक थे। मरहूम की पत्नी तीन बेटे और चार बेटियां हैं। अल्लाह तआला इन बच्चों को भी अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए जो अहमदी नहीं हैं और मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए। मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

दूसरा वर्णन आदरणीय शेख़ नासिर अहमद साहिब, मुट्ठी थरपारकर ,का है जो अभी गुज़शता दिनों तरानवे साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मुट्ठी के सबसे पहले अहमदी थे। 1969 ई. में उन्होंने अहमदियत क़बूल की। एक पुरजोश दाई इल्लल्लाह और दीन की ग़ैरत रखने वाले निडर अहमदी थे। पांचो समय नमाज़ों की पाबंदी, मेहमान-नवाज़ी, ख़िलाफ़त से वालहाना इशक़ उनके नुमायां औसाफ़ थे। उन्हें मुट्ठी और इस के गर्द-ओ-नवाह में मुतअद्दि बैअतें करवाने की भी तौफ़ीक़ मिली। मुट्ठी की पहली मस्जिद उन्ही की दी हुई जगह पर बनाई गई थी। ख़ानदान और बिरादरी की तरफ़ से उन्हें शदीद मुख़ालिफ़त का सामना रहा। खासतौर पर बच्चों की शादी का वक़्त तो बिरादरी ने अपने ख़ानदान से बाहर अहमदियों में रिश्ता करने से रोकने के लिए शदीद दबाओ डाला। आपका बाईकॉट किया गया। वे उनकी शादीयों में शामिल भी नहीं हुए लेकिन अल्लाह तआला के ख़ास फ़ज़ल से उन्होंने बावजूद मुख़ालेफ़त के तमाम बच्चों की शादियां अहमदी घरानों में कीं। आपने अपने बच्चों की तर्बीयत की तरफ़ ख़ास तवज्जा दी। सबको क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाया, नमाज़ का पाबंद किया। अपनी औरतों को जो पहले हिंदू थीं और उनका रिवायती तर्ज़ लिबास छिड़वा कर उन्हें बुर्क़ा पहनवाया।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह एक मर्तबा उनको ख़राज-ए-तहसीन देते हुए फ़रमाया था कि "अगर हर सैंटर में हम एक नासिर पैदा कर दें तो हम यक़ीनन कामयाब हो जाऐंगे।" उनके पीछे रहने वालों में दो बेटे और चार बेटियां शामिल हैं। उनके कुछ बच्चे भी वाक़िफ़ ज़िंदगी हैं, ख़िदमते दीन कर रहे हैं। अल्लाह तआला मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए।

तीसरा जो वर्णन है वह मलिक सुलतान अहमद साहिब साबिक़ मुअल्लिम वक़्फ़ जदीद का है। यह भी गुज़शता दिनों चौरासी साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। 1938 ई. में पक्का नस्वाना ज़िला झंग में पैदा हुए थे। पैदाइशी अहमदी थे। उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके पिता मुहतरम सज्जादा साहिब अल-मारूफ़ शहज़ादा के ज़रीया से आई जिन्हों ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में ख़ुद क़ादियान जा कर बैअत की थी। उन्होंने मिडल तक तालीम हासिल करने के बाद 1960 ई. में वक़्फ़-ए-जदीद के तहत ख़िदमत की दरख़ास्त दी। उनका वक़्फ़ क़बूल हुआ। फिर हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह राबे जब वक़्फ़-ए-जदीद के इंचार्ज थे तो ये उनके ज़ेर-ए-तर्बियत रहे और कुछ अरसा वहां से तर्बीयत हासिल कर के 1960 ई. में उनकी मुअल्लिम के तौर पर तक़र्ररी हुई। थर पारकर के इलाक़े में भेजे गए जहां उन्होंने बड़ा काम किया। फिर पाकिस्तान के दूसरे इलाक़ों में भी रहे। अड़तीस साल से ज़ायद उनकी ख़िदमत का दौर है। अपने मुफ़व्विज़ा फ़रायज़ बड़े ख़ुश-उस्लूबी से सरअंजाम देते रहे। तब्लीग़ का बहुत शौक़ था और इसी वजह से 1968 ई. में उन पर क़ातिलाना हमला भी हुआ था। सच्चाई, मिलनसारी, मेहमान-नवाज़ी, ख़ुशमिज़ाजी उनके बुनियादी वस्फ़ थे। तहज्जुद गुज़ार, नमाज़ बाजमाअत के पाबंद, दुआ-गो इन्सान थे। मरते दम तक निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त के साथ वफ़ा का ताल्लुक़ रखा और अपनी औलाद को भी इस की तलक़ीन करते रहे। पीछे रहने वालों में अहलिया के इलावा तीन बेटे और दो बेटियां शामिल हैं। अल्लाह तआला मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए उनसे, दर्जात बुलंद करे।

अगला वर्णन आदरणीय मुजीब अहमद राजीकी साहिब का है जो साअद अल्लाह पुर ज़िला मंडी बहा-उद-दीन के रहने वाले थे। यह भी गुज़शता दिनों में छयासी साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम मूसी थे।पीछे रहने वालों में में दो बेटे और एक बेटी शामिल हैं। एक बेटा उनका बाहर जर्मनी में है और कुछ लाहौर में मुक़ीम हैं। मरहूम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम के सहाबा हज़रत ग़ुलाम अली साहिब राजीकी रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे और हज़रत मौलवी ग़ुलाम रसूल साहिब राजीकी रज़ियल्लाहु अन्हो के भतीजे थे और हज़रत मौलवी ग़ौस मुहम्मद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के नवासे थे।

उनके बेटे मबरूर साहिब वर्णन करते हैं उनको सैंतीस साल बतौर सदर जमाअत साअद अल्लाह पुर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। बहुत दुआ-गो, आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम के सच्चे फ़िदाई, ख़िलाफ़त से बेहद मुहब्बत रखने वाले, निडर और बहादुर ख़ादिम सिलसिला थे। तीन मर्तबा उनको असीराने राह मौला रहने की तौफ़ीक़ मिली। पांचो वक्क्त नमाज़ के पाबंद होने के साथ साथ बाक़ायदगी से लंबी तहज्जुद अदा करने वाले थे। बेशुमार मौक़ों पर ख़ुदा तआला ने उनकी दुआओं को क़बूलियत का फ़ौरी शरफ़ बख़्शा। साहिबे रोया कशूफ भी थे। असीरी के दौरान भी उनको कई दफ़ा ख़्वाबें आती रहीं कि अमुक दिन रिहाई होगी या अमुक वक़्त यह वाक़िया होगा और इसी तरह होता भी रहा। दिन में अक्सर दुरूद शरीफ़ और दुआओं में मसरूफ़ रहते बल्कि एक शख़्स ने लिखा कि एक दिन फ़ज्र की नमाज़ के लिए आप आए तो उसने उनको हाथ लगाया तो बड़ा तेज़ बुख़ार था लेकिन इस के बावजूद मस्जिद में आए बाजमाअत नमाज़ अदा करने के लिए। और एम.टी.ए. से ताल्लुक़ और ख़िलाफ़त से मुहब्बत का यह हाल था कि ऊंचा सुनने लगे थे, समझ नहीं भी आती थी तब भी ख़ुतबा के दौरान टी.वी के सामने बैठ कर ज़रूर सुनने की कोशिश करते थे। उनकी वफ़ात के बाद इर्द-गिर्द के गांव के ग़ैर अहमदी बहुत ज़्यादा आए बल्कि पहले भी आते रहते थे और बड़ा एतेक़ाद था, उनसे दुआएं कराया करते थे। वफ़ात के बाद तो आए ही अफ़सोस करने थे। दुआएं कराते थे और कहा करते थे अगर यह अहमदी न होते तो सैंकड़ों हज़ारों की संख्या में उनके मुरीद होते और उनकी दुआओं की क़बूलीयत के कई ग़ैर अहमदियों ने भी वाक़ियात वर्णन किए हैं और मिसालें दी हैं।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए दर्जात बुलंद करे। उनकी औलाद को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

इन शा अल्लाह नमाज़ों के बाद इन सबकी नमाज़ जनाज़ा अदा की जाएगी।

★ ★ ★

सुधार

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने ख़ुतबा जुमअः फ़र्मूदा 19 अगस्त 2022 में आदरणीय नसीर अहमद साहिब शहीद आफ़ पाकिस्तान का वर्णन फ़रमाया था, इस ख़ुतबा का मुकम्मल मतन अख़बार बदर टी तिथि 8 सितंबर 2022 के शुमारा में शाय हुआ है। आदरणीय शहीद मरहूम के कवायफ़ कुछ दुरुस्ती के साथ दुबारा शाय किए जा रहे हैं। अहबाब दुरुस्ती फ़र्मा लें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : "इस वक़्त में एक शहीद का भी वर्णन करना चाहता हूँ। एक हमारे शहीद नसीर अहमद साहिब हैं जो अब्दुल ग़नी साहिब के बेटे थे। रबवः में दारुल रहमत शर्क़ी में रहते थे। बारह अगस्त को एक अहमदियत के दुश्मन ने ख़ंजरों के वार करके उनको शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन ।

तफ़सीलात के मुताबिक़ नसीर अहमद साहिब बस स्टॉप पर अपने एक अख़बार बेचने वाले दोस्त के पास रुके तो एक मज़हबी जुनूनी हाफ़िज़ शहज़ाद हसन वहां आ गया और उनसे पूछा कि क्या आप अहमदी हैं जिस पर नसीर अहमद साहिब ने उत्तर में कहा कि मेरा ताल्लुक़ जमाअत अहमदिया से है। इस पर वह व्यक्ति ने जमाअत के खिलाफ़ मुख़ालिफ़ाना नारेबाज़ी का मुतालिबा किया। इन्कार पर अपने थैले से ख़ंजर निकाल कर नारे लगाते हुए नसीर अहमद साहिब पर असंख्य वार किए और चंद सैकिण्ड में इतने वार किए कि वह जान-लेवा साबित हुए। बहरहाल ख़ंजर के असंख्य वारों के कारण यह शहीद हो गए। उनकी उमर शहादत के वक़्त बासठ साल थी। घटना के बाद क़ातिल ने अपने

बयान में कहा कि मुझे इस फ़ेअल पर कोई शर्मिंदगी नहीं है और आइन्दा भी अवसर मिला तो इस काम से गुरेज़ नहीं करूँगा। यह सारा वाक़िया जो हुआ है एक दो मिनट में बल्कि एक मिनट के अंदर अंदर ही हुआ और कहते हैं कि ढाई तीन मिनट के अंदर अंदर उनको हस्पताल भी पहुंचा दिया था लेकिन बहरहाल अल्लाह को यही मंज़ूर था और जो भी वार थे वे जान-लेवा साबित हुए और शहीद हुए।

शहीद मरहूम के ख़ानदान में अहमदियत का आरंभ शहीद मरहूम के दादा आदरणीय फ़िरोज़ दीन साहिब आफ़ रायपुर, ज़िला स्यालकोट, के ज़रीया हुआ जिन्हों नें 1921 ई. में ख़िलाफ़त सानिया में बैअत करके अहमदियत में शमूलीयत इख़्तेयार की थी। प्राइमरी तालीम के बाद उन्होंने आगे पढ़ाई नहीं की और अपने आबाई पेशा ज़मींदारी से मुंसलिक हो गए। फिर दस साल पहले यह बाहर भी कुछ अरसा रहे। मलेशिया इत्यादि में मुलाज़मत करते रहे फिर पाकिस्तान आ गए। और लाहोर में नोकरी करने के कारण रहते रहे दस वर्ष पूर्व यह रब्वः शिफ्ट हुए। आज कल फ़ारिग थे। कोई काम नहीं कर रहे थे। दिल के मरीज़ भी थे। ज़्यादा वक़्त मुहल्ला की सतह पर जमाअती ख़िदमात में गुज़ारते थे। इस वक़्त भी मजलिस अंसारुल्लाह में बतौर मुंतज़िम अंसार और मोहस्सिल विभाग माल ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे थे। बेशुमार ख़ूबियों के मालिक थे। मुहल्ले में हर किसी की मदद बिलख़सूस यतीमों और ग़रीबों की मदद के लिए हर-दम तैयार रहते। मस्जिद की सफ़ाई का भी ख़ास ख़्याल रखते। निहायत दियानतदार, मेहनती, मिलनसार और दिलेर इन्सान थे। उनकी टांग में चोट लगने की वजह से फ्रैक्चर हो गया था उसकी वजह से चलने में भी दिक़्क़त थी लेकिन इसके बावजूद भी रात के वक़्त जमाअती तौर पर अगर डयूटी और पहरे के लिए बुलाया जाता तो हाज़िर हो जाते। ख़ुतबा सुनने का बाक़ायदा इंतेज़ाम था। नमाज़ों की अदायगी का बिलख़सूस एहतेमाम करते और अपने मुहल्ले में जायज़ा भी लेते। ख़िलाफ़त से उनका अत्यधिक इशक़ था। नमाज़-ए-फ़ज्र के बाद एक घंटा मोबाइल फ़ोन पर तिलावत समाअत करना उनका रोज़ाना का मामूल था और तक़रीबन रोज़ाना दुआ के लिए बहिश्ती मक़बरे भी जाते थे। और सदर मुहल्ला कहते हैं कि जब भी जमाअती काम के लिए ज़रूरत पड़ी शहीद मरहूम फ़ौरन हाज़िर होते और कभी ऐसा नहीं हुआ कि उन्होंने इन्कार किया हो।

मरहूम की बेटी मुबारका साहिबा कहती हैं कि शहादत से चंद दिन क़बल उन्होंने ख़ाब में देखा कि लोगों का हुजूम है और सदमा का माहौल है जिस पर सदक़ा भी दिया गया। शहीद मरहूम पिछले कुछ अरसा से ख़ुद भी बार-बार इज़हार करते थे कि मुझे ऐसा लगता है कि मेरा वक़्त कम रह गया है।

उनकी पत्नी मतीन अख़तर साहिबा के इलावा तीन बेटियां हैं जो उनकी यादगार हैं। अल्लाह तआला इन सबको सब्र और हौसला अता फ़रमाए।

उनके भाई तनवीर अख़तर साहिब कहते हैं कि ज़ाहिरी तालीम और जमाअत के सम्बन्ध में जबकि इलम इतना नहीं था लेकिन बचपन से ही जमाअत के लिए बेहद ग़ैरत थी और ख़िलाफ़त से बे-इंतिहा प्यार था। एक सादा-दिल और बेनफ़्स इन्सान था और दूसरों को ख़ुश देखकर ख़ुशी पाता था। लाहौर से ईदों के मौक़ा पर घर आते तो बहुत सा खाने पीने का सामान लेकर आते और हमेशा बहुत अच्छे नए कपड़े अपने लिए सिलाई करवा के लाते और कहते हैं कि केवल ईद के रोज़ पहनते और फिर वे सूट क्योंकि मैं वाक़िफ़ ज़िंदगी था तो मुझे दे दिया करते थे और मेरा पुराना सूट ले लेते थे। उनके भतीजे कहते हैं कि फ़ोन हर वक़त अपने साथ रखते थे कि जमाअत में से किसी को मदद की ज़रूरत पड़ सकती है। अगर फ़ोन पास न हो तो राबिता किस तरह होगा। रात के औक़ात में भी फ़ोन बजता तो फ़ौरन उठकर जमाअती ख़िदमत के लिए तैयार हो जाते। रबवः के कोने कोने में भी मदद के लिए जाना पड़ता तो जाते। ख़ून के अतिया के लिए हमेशा तैयार रहते और इस तरह बेशुमार लोगों की जानें बचाने का सबब बने। दिल की बीमारी की आपने कभी पर्वा नहीं की। आपके नज़दीक ज़रूरत मंदों की इमदाद करना अख़लाक़ी फ़र्ज़ था जिसकी एहमीयत आपकी बीमारी से ज़्यादा आपको थी।

अल्लाह तआला शहीद मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए और जन्नतुल फ़िरदौस में आला मुक़ाम अता करे और पीछे रहने वालों का भी हामी-ओ-नासिर हो। उनकी नेकियों को जारी रखने की उनकी औलाद को भी तौफ़ीक़ दे।

नमाज़ के बाद में इन शा अल्लाह उनका जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा।

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्-फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमअः और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमअः प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना सम्भव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(सम्पादक)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

जमाअत का परिचय हो रहा है जिसमें बहुत सहिष्णुता और भाई चारा पाया जाता है और इस बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। मुझे ताज्जुब हुआ कि इस शहर की जमाअत की तजनीद सिर्फ 188 है परन्तु ऐसे उत्तम समारोह का प्रबन्ध किया है। मुझे इस बात का इसलिए अनुमान है क्योंकि में FDP Munich का प्रधान हूँ। जो एक हज़ार नफ़ूस पर आधारित है। मुझे नहीं लगता कि इन एक हज़ार लोग के लिए आसान होगा कि वह ऐसी समारोह आयोजित करें। इस बिना पर मैं इस बेहतरीन प्रबन्ध के लिए मुबारकबाद देता हूँ।

एक साहब कहते हैं: यह बड़ा अच्छा अवसर होता है कि जब कोई नई इबादत-गाह के बनने होता है। यह एक बड़ी प्रभावित करने वाली चीज़ है कि एक बैनुल अक़वामी जमाअत के प्रधान हमारे क्षेत्र में पधारे हैं। हुज़ूर अनवर का व्यक्ति बड़ा प्रभावित करने वाला है। आपने अमन का संदेश लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया है। इस जमाअत के लिए बड़ी सआदत की बात है कि हुज़ूर अनवर इस मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर पधारे हैं। एक साहब कहते हैं :

मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। भाषण बहुत आरिफ़ाना और शानदार था। जमाअत अहमदिया बहुत मुनज़्ज़म है। इन्सान यहां पर आकर अपने आपको सुरक्षित महसूस करते है।

एक महिला कहती हैं : मैं बहुत प्रभावित हुई हूँ। विशेषता जो अमन के लिए हल प्रस्तुत किया गया है अर्थात संसार के सब इन्सानों को चाहिए कि मज़हब-ओ-मिल्लत से उपर उठ कर एक दूसरे से मुहब्बत करें न यह कि एक दूसरे के साथ दुश्मनी बरती जाए। यह एक बहुत प्रभावित करने वाला संदेश है। यह समारोह बड़ा सफ़ल रहा है। मुझे यह बात अच्छी लगी है कि इस प्रोग्राम के लिए केवल अपनी जमाअत के लोग या सियास्तदान नहीं बुलाए गए बल्कि पड़ोसियों को भी दावत दी गई है। अर्थात प्रत्येक वर्ग के लोगों को दावत दी गई है। आज की हाज़िरी से भी अनुमान हो जाता है कि यहां पर एक जमाअत क़ायम हो चुकी है।

एक साहब ने कहा : यह बात बहुत अच्छी है कि यहां पर इतनी कुशादा दिल्ली पाई जाती है अर्थात यह कि हम एक जमाअत हैं। हुज़ूर का संदेश था कि हम आपस में अमन के साथ रहें और यह मुझे बहुत अच्छा लगा। यदि संसार का प्रत्येक इन्सान यह सोच रखने वाला हो तो प्रत्येक जगह अमन क़ायम हो जाएगा। मुझे अच्छा लगा कि यहां के सियास्तदान आपकी जमाअत से बहुत ख़ुश हैं और लोग एतराफ़ कर रहे हैं कि आपकी जमाअत संसार को अमन और सहायता देना चाहती है और मेरे विचार से यह सही है।

एक सियास्तदान ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा :

मैं बहुत प्रभावित हुई हूँ, विशेषता आपके माटो से। इस में बहुत सी बातें छुपी हुई हैं। हम इस से बहुत कुछ सीख सकते हैं और मैं आशा करती हूँ कि आइन्दा भी इस पर अनुकरण किया जाएगा।

मैंने मस्जिद देखी है और पड़ोसियों से भी इस बारे में बात की है। उन्होंने मस्जिद को स्वीकार कर लिया हुआ है और मेरे तक यह बात पहुंच चुकी है कि आपस के अच्छे संबंध हैं। मैं आशा करती हूँ कि आइन्दा भी इसी तरह प्यार के साथ रहा जाएगा। मुझे समारोह बहुत अच्छी लगा। बहुत से लोग आए हैं।

एक साहब ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा।

मुझे यह समारोह बहुत अच्छा लगा है। मुझे बहुत ख़ुशी है कि मुझे हुज़ूर अनवर को मिलने का फिर अवसर मिला है और ऐसा अवसर बहुत विशेष अवसर है। यह एक बड़ी स्पष्ट बात है कि हमारे मुल्क में धार्मिक आज़ादी है और यहाँ हमें प्रत्येक को इबादत-गाह बनाने का हक़ है समारोह सफ़ल रहा है।

एक मेहमान ने इन शब्दों में अपने विचारों का प्रकटन किया कि :

मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मैं स्वयं इंटरफेथ डायलॉग्स के लिए काम करता रहा हूँ। इस लिए मुझे जमाअत का थोड़ा सा परिचय है परन्तु आज मेरे ज्ञान में पर्याप्त बढ़ोतरी हुई है। मैं इस बात से बहुत प्रभावित हुआ हूँ कि आपकी जमाअत में इंटरफेथ डायलॉग्स पर बहुत ज़ोर दिया जाता है। मुझे ख़ुशी है कि Munich के क़रीब इकट्ठे मिल बैठने की जगह मयस्सर है। यह समारोह अत्यधिक मुनज़्ज़म है जगह अच्छी है । स्टेज बहुत अच्छा है इस से बेहतर शायद सम्भव नहीं था। धार्मिक आज़ादी सारी संसार में एक उसूली चीज़ होनी चाहिए।

10 जून 2014 दिन मंगल हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह चार बजकर बीस मिनट पर "मस्जिद अलमहदी" Neufahm में पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

फ़ैमिली-ओ-इन्फ़िरादी मुलाक़ातें : प्रोग्राम के अनुसार सुबह दस बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारेऔर फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज संपूर्णता दस फ़ैमिलीज़ के 37 लोग और 49 लोगों ने इन्फ़िरादी तौर पर अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

मुलाक़ात का सौभाग्य पाने वाली यह फ़ैमिलीज़ Munich और इसके इर्द-गिर्द की जमाअतों Neufahmऔर Freising से आई थीं। इन सभी फ़ैमिलीज़ ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य भी पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों को चॉकलेट फ़रमाए।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम मध्याह्न 12 बजे तक जारी रहा। इसके बाद कुछ देर के लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

जर्मनी का एक सुन्दर क्षेत्र : आज प्रोग्राम के अनुसार यहां से जर्मनी के एक सुन्दर क्षेत्र Falkstein Froenten के लिए प्रस्थान था। साढ़े 12 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान से बाहर पधारे। आदरणीय अब्दुल बासित तारिक़ साहब मुबल्लिग़ जर्मनी और उनके बेटे आदरणीय अताऊल वासे तारिक़ साहब मुबल्लिग़ इटली बाहर सामने खड़े थे। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक दोनों से उन का हाल दरयाफ़त फ़रमाया और दोनों ने हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इसके बाद विभिन्न हलक़ों की लोकल मजालिस आमला ने समूहों की सूरत में हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। इस अवसर पर बच्चों और बच्चियों के समूहों ने अलविदाई दुआइया नज़्में पढ़ीं और यहां से प्रस्थान का समय क़रीब आ रहा था। जमाअत के लोग पुरुष और महिलाए अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहने के लिए मस्जिद के बाहरी सेहन में उपस्थित थे और बहुतों की आँखें आंसूओं से भरी हुई थीं। 12 बज कर 35 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इजतेमाई दुआ करवाई और क़ाफ़ला Falkstein के क्षेत्र की ओर रवाना हुआ। Neufahm से Falkstein की दूरी 154 किलोमीटर है। यह सुन्दर क्षेत्र बुलंद-ओ-बाला सरसब्ज़-ओ-शादाब पहाड़ों और वादियों पर आधारित है। पहाड़ीयों की चोटियों पर जगह जगह बर्फ़ पड़ी नज़र आती है और कुछ चोटियां बर्फ़ से ढकी हुई हैं। एक लंबा पहाड़ी सिलसिला है जिसके एक ओर जर्मनी की आख़िरी सीमा हैं और दूसरी ओर मुल्क आस्ट्रिया Austria है।

एक पहाड़ की चोटी पर होटल Burg Falkenstein है और इसके साथ ही एक दूसरी चोटी पर एक क़दीम क़िला के आसार दिखाई देते हैं। पहाड़ों के इर्द-गिर्द एक बलखाता हुआ तंग रास्ता यहां होटल तक पहुँचाता है। रास्ता के एक ओर गहराई है। इसी रास्ता से गुज़रते हुए अढ़ाई बजे मध्याह्न हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की इस स्थान पर तशरीफ़ आवरी हुई। जहां होटल के मालिक और स्टाफ़ ने सदस्यना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को स्वागतम कहा। ख़ुद्दाम की एक टीम सुबह से ही इस जगह पहुंची हुई थी जिस ने हुज़ूर अनवर की आमद से पूर्व समस्त इंतेज़ामात कर रहे थे।

मध्याह्न के खाने और नमाज़ जुहर तथा अस्र की अदायगी का प्रबन्ध इसी होटल के एक हिस्सा में किया गया था। इस होटल के ऐन सामने देश ऑस्ट्रिया Austria के बुलंद पहाड़ और बर्फ़ से ढकी चोटियां नज़र आ रही थीं। उन्हें देखकर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हमने ऑस्ट्रिया भी देख लिया है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस दिलफ़रेब और क़ुदरती हुस्न से मालामाल सुन्दर इलाक़े का विभिन्न अतराफ़ से फ़रमाया :

खाने के प्रोग्राम के बाद चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस होटल के एक हाल में नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई।

शेष .....

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

* ग़ैर अहमदी मुस्लमान आरोप लगाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुद लिखा है कि जिसने मेरी सारी कुतुब तीन दफ़ा नहीं पढ़ीं उसे मेरे दावा की समझ नहीं है। क्या सब अहमदियों ने ये कुतुब तीन दफ़ा पढ़ी हैं?

* ख़ुतबा जुमअः के आख़िर पर इमाम नीचे बैठता है और फिर उठकर ख़ुतबा सानिया पढ़ता है, वह ऐसा क्यों करता है?

* एक जमाअती ओहदेदार की अहमदी लड़कियों को ग़ैर अहमदी और ग़ैर मुस्लिम मर्दों से शादी की इजाज़त मिलने पर फ़िक्रमंदी और परेशानी के इज़हार पर हुज़ूर अनवर की हिदायत और राह-नुमाई

* कोरोना वायरस के लिए जो आजकल टीका आया हुआ है क्या वह हमें लगवाना चाहिए या नहीं?

* हुज़ूर इतने सारे काम इकट्ठे किस तरह कर लेते हैं?

* हुज़ूर अपने ख़ुतबात जुमअः की तैयारी किस तरह करते हैं?

* क्या अल्लाह तआला पहले से जानता है कि हम जन्नत में जाऐंगे या दोज़ख़ में, और यदि वह जानता है तो फिर हमारी ज़िंदगी का उद्देश्य क्या है?

* कोरोना वायरस के ख़त्म होने के बाद दुनिया फिर से वैसे ही नॉर्मल हो सकती है जैसे पहले थी?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(भाग-22) हिस्सा- 3

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ अत्फालुल अहमदिया जर्मनी की virtual मुलाक़ात तिथि 29 नवंबर 2020 ई. में एक तिफ़्ल के इस प्रश्न पर कि कोरोना वायरस के लिए जो आजकल टीका आया हुआ है क्या वह हमें लगवाना चाहिए या नहीं ? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस के जवाब में फ़रमाया :

उत्तर : अगर साबित हो जाए कि वह अच्छा ईलाज है और अगर गर्वनमैंट कहती है कि लगवाओ तो लगवा लो कोई हर्ज नहीं है। लेकिन पहले उसका लोगों को तजुर्बा तो हो जाएगी कि जिनको लगा है उनको लाभ भी होता है या नहीं। सिर्फ सुई चुभोने के लिए न टीका लगवा लो। अगर लाभ होता है तो ज़रूर लगवाना चाहिए, कोई हर्ज नहीं है।

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक और तिफ़्ल ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर इतने सारे काम इकट्ठे किस तरह कर लेते हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न के जवाब में फ़रमाया :

उत्तर : एक यह कि जब वक़्त मिले अपना रोज़ का काम रोज़ करने की आदत डालनी चाहिए। दूसरा यह कि बाअज़ दो दो काम एक वक़्त में भी हो जाते हैं। अब मैं किसी की बातें सन रहा हूँ और साथ कोई ख़त भी पढ़ लूं तो दो काम एक वक़्त में कर सकता हूँ। इस तरह फिर थोड़े वक़्त में ज़्यादा काम हो जाता है। फिर यह कि इन्सान का इरादा हो कि मैंने अपना काम ख़त्म करना है। जब काम ख़त्म करने का इरादा हो तो फिर इन्सान तवज्जा से काम करता है तो काम ख़त्म हो जाता है। तुम लोग भी मेहनत करोगे तो तुम्हारा काम भी ख़त्म हो जाया करेगा। अगर तुम मेहनत की आदत डाल लो तो तुम भी इसी तरह कर लोगे,यह कोई मसला नहीं है।

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक और तिफ़्ल ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर अपने ख़ुतबात जुमा की तैयारी किस तरह करते हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न के जवाब में फ़रमाया :

उत्तर : बाअज़ रिसर्च वाले मज़ामीन होते हैं। मसलन आजकल मैं सहाबा की हिस्ट्री वर्णन कर रहा हूँ। इस में जो रिसर्च वाली टीम मेरे साथ है वह हवाले इत्यादि निकाल के मुझे देते हैं। लेकिन बाअज़ ऐसे ख़ुतबात जो उमूमन तहरीक जदीद पर, वक़्फ़-ए-जदीद पर या तर्बीयत पर मैं देता हूँ उस के लिए मैं ख़ुद कोई न कोई क़ुरआन की आयत ले कर और फिर उस की तशरीह और तफ़सीर करने के लिए मैं ख़ुद अपने हाथ से सारे हवाले तैयार कर लेता हूँ। इस में भी अगर कोई हवाले लेने हूँ तो यह रिसर्च टीम मेरी मदद कर देती है। कई दफ़ा मैं ख़ुद ही सारे हवाले निकाल लेता हूँ और बाअज़ दफ़ा में अपनी टीम से कहता हूँ कि मुझे अमुक अमुक रैफ़रैंस निकाल के देदो। फिर मैं ख़ुतबा जुमा तैयार कर लेता हूँ।

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक और तिफ़्ल ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि क्या अल्लाह तआला पहले से जानता है कि हम जन्नत में जाऐंगे या दोज़ख़ में, और अगर वह जानता है तो फिर हमारी ज़िंदगी का मक़सद क्या है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : देखो एक अल्लाह तआला का इलम है और एक हमारा अमल है। अल्लाह तआला जानता है कि अमुक शख़्स दोज़ख़ में जाएगा लेकिन अल्लाह तआला हर शख़्स को रस्ता बताता है कि तुम यह नेक काम करोगे तो जन्नत में जाओगे। यह बुरे काम हैं, यह करोगे तो दोज़ख़ में जाओगे। इसलिए अल्लाह तआला से अंजाम बख़ैर होने की दुआ मांगनी चाहिए कि जब हमारा मरने का वक़्त आए तो उस वक़्त हम अल्लाह की बातों पर ईमान लाने वाले हूँ ताकि हम जन्नत में जाएं। या हमारी ऐसी कोशिश हो। क़ुरआन शरीफ़ ने भी हमें यह दुआ सिखाई है कि हम उस वक़्त मरें जब अल्लाह तआला हमारे से राज़ी हो। तो मक़सद यही है कि हम उस वक़्त जन्नत में जाएं और अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने वाले हूँ। बाक़ी अल्लाह तआला की रहमानियत है वह किसी को बख़श भी देती है। एक शख़्स के बारे में रिवायत में आता है कि वह बहुत गुनाहगार था, उसने बेशुमार क़तल किए हुए थे, निनानवे क़तल किए हुए थे। उसको ख़्याल आया कि मैं बड़ा बुरा आदमी हूँ, मैं अपनी इस्लाह कर लूं ताकि अल्लाह तआला मुझ से राज़ी हो जाए और मैं जन्नत में चला जाऊं। वह एक मौलवी के पास गया। उसने उस से पूछा कि मैंने इतने क़तल किए हैं, बहुत गुनाहगार हूँ। क्या मैं जन्नत में जा सकता हूँ? उसने कह दिया कि नहीं तुम जन्नत में नहीं जा सकते। तुम दोज़ख़ में जाओगे ही जाओगे। उस पर उसने उस को भी क़तल कर दिया कि जहां निनानवे क़तल किए हैं एक और क़तल करो ताकि सौ पूरे हो जाएं। सो क़तल करने के बाद फिर उसने किसी और से पूछा कि भई कोई ऐसा रस्ता है जहां में अल्लाह को राज़ी कर सकूं? उस शख़्स ने कहा हाँ फ़ुलां शहर में एक शख़्स बैठा है वह तुम्हें सही रस्ता बता सकता है, उसके पास जाओ। जब वह वहां जा रहा था तो वह रास्ते में मर गया, उसको मौत आगई। जब वह फ़ौत हो गया तो अल्लाह तआला ने इस शहर को जिससे वह क़तल करके निकला था इस से दूर कर दिया और जिस तरफ़ वह जा रहा था उसको इसके क़रीब कर दिया। अल्लाह तआला ने एक तमसीली ज़बान प्रयोग की। और फिर फ़रिश्तों को कहा कि जाओ और बताओ उसके सम्बन्ध में क्या फ़ैसला है। दोनों फ़रिश्ते आए एक दोज़ख़ में ले जाने वाला और एक जन्नत में ले जाने वाला। अब दोनों ले जाने वालों में झगड़ा हो गया। जो दोज़ख़ में ले जाने वाला फ़रिश्ता था वह कहता था कि उसने सौ क़तल किए हैं मैंने अल्लाह तआला से कह कर उस को दोज़ख़ में डलवा देना है। जो जन्नत में ले जाने वाला था वह कहता था कि नहीं मुझे अल्लाह तआला ने भेजा है कि जा कर उस का रास्ता नापो। उसने कहा अच्छा। फिर फ़ैसला यह हुआ कि हम फ़ासिला नापते हैं अगर तो यह इस शहर के क़रीब हुआ जहां यह अपने गुनाह बख़्शवाने के लिए जा रहा था तो ये जन्नत में चला

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 06 October 2022 Issue No. 40

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

जाएगा और अगर यह इस शहर के क़रीब हुआ जहां से ये क़तल कर के निकल रहा था तो दोज़ख़ में जाएगा। फिर जैसा कि मैंने कहा अल्लाह तआला ने वह फ़ासिला कम कर दिया और जब फ़ासिला नापा गया तो उस शहर के वह ज़्यादा क़रीब हो गया जहां वह गुनाह बख्शवाने के लिए जा रहा था। और सिर्फ एक बालिशत का फ़ासिला था, एक हाथ का, (इस मौक़ा पर हुज़ूर अनवर ने अपने हाथ की बालिशत बना कर इतफ़ाल को दिखाते हुए फ़रमाया) सिर्फ इतना फ़ासिला इस तरफ़ कम था और दूसरी तरफ़ ज़्यादा था। और अल्लाह तआला ने उसे बख़श दिया और जन्नत में ले गया। तो यह अल्लाह तआला की रहमानियत है। और एक दूसरी रिवायत भी है कि एक शख़्स ने किसी को कहा कि क्या मैं बख़्शा जाऊँगा? उसने कहा नहीं, तुम बहुत गुनाहगार आदमी हो, तुम नहीं बख़्शे जा सकते। तो अल्लाह तआला ने वह जो नेक आदमी था, बड़ी नमाज़ें पढ़ने वाला था, अपने आपको बड़ा नेक समझता था, उसको कहा कि तुम कौन होते हो फ़ैसला करने वाले कि कौन जन्नत में जाएगा और कौन दोज़ख़ में जाएगा। फिर क़िस्मत से दोनों एक ही वक़्त में इकट्ठे मर गए। और फिर जब अल्लाह तआला के पास हाज़िर हुए तो अल्लाह तआला ने उस नेक आदमी को जिसने गुनाहगार आदमी को कहा था कि तुम दोज़ख़ में जाओगे और मैं जन्नत में जाने वाला हूँ, मेरी गारंटी है। अल्लाह तआला ने कहा तुम्हारी गारंटी कहाँ से आ गई? चलो तुम्हें मैं दोज़ख़ में डालता हूँ और जिसको तुम कह रहे थे कि दोज़ख़ में जाओगे और जन्नत में नहीं जाओगे उसको मैं जन्नत में डालता हूँ। तो अल्लाह तआला की रहमानियत तो यह है। इसलिए हमारा काम यह है कि हम कोशिश करें कि अल्लाह तआला को राज़ी करते रहें। अल्लाह तआला का इलम भी है लेकिन अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर भी है। अल्लाह तआला रहमान भी है, उसकी रहमानियत भी है।और अल्लाह तआला ग़फ़ूर भी है, बख़शने वाला भी है। तो आख़िर में आकर अल्लाह तआला अपने फ़ैसले को बदल के तक़दीर बदल भी सकता है। जब इस में हर क़ुदरत है तो इस को यह क़ुदरत भी है कि वह अपना फ़ैसला बदल दे। इसलिए अगर तुमने यह कह दिया कि जी अल्लाह तआला ने फ़ैसला कर लिया है कि हमने दोज़ख़ में जाना है तो चलो गुनाह करते रहो कोई बात नहीं। फ़ुलां काम करते रहो, हराम चीज़ें खाते रहो और स्वर खाते रहो और शराब पीते रहो और गुनाह करते रहो तो कुछ नहीं होगा। अब इतना कुछ कर लिया है, अल्लाह ने हमें कहाँ बख़्शना है। अल्लाह तआला कहता है नहीं, कोशिश करो, कोशिश करो मैं आख़िर में भी तुम्हें बख़श सकता हूँ। इसलिए कोशिश यह करनी चाहिए कि अल्लाह तआला शुरू में ही बख़श दे और फिर इन्सान यह दुआ मांगे कि मेरा अंजाम बख़ैर हो और मैं आख़िर तक नेकियां ही करता रहूं। इसलिए हमें कोशिश करनी चाहिए।अल्लाह तआला को इख़तेयार है नाँ? अल्लाह तआला मालिक है उस को हर चीज़ का इख़तेयार है। वह आख़िर में आके तुम्हें बख़श भी सकता है। तुमने कह देना है कि मेरी तक़दीर का फ़ैसला हो गया मैं तो गुनाहगार हूँ। अल्लाह तआला ने कहा अगर मैं सौ क़तल करने वाले को बख़श सकता हूँ तो तुम्हें भी बख़श सकता हूं।

शेष.....

★ ★ ★

सालाना इज्तिमाआत 2022 ई.

सय्यदना हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ज़ेली तंज़ीमात मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया, मज्लिस अंसारुल्लाह और लजना इमाइल्लाह के सालाना इज्तिमाआत के लिए तिथि 21,22,23 अक्तूबर 2022 ई. दिन शुक्रवार, शनिवार, रविवार की तिथियों की दुआ तथा प्रेम पूर्वक स्वीकृति प्रदान की है। लोग इसके अनुसार दुआओं के साथ इन इज्तिमाआत में शामिल होने की हर सम्भव कोशिश करें।

(सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत)

पृष्ठ 01 का शेष

अन्हु से भी रिवायत की है कि اَلَا لَيْسَ مِنَ الدَّوَابِّ شَيْءٌ حَرَامٌ اِلَّا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِي كِتَابِهٖ قُلْ لَّآ اَجِدُ इमाम मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु का भी यही मज़हब था।
(रूहुल मानी, भाग 8 - आयत सूरत इनाम)

अब प्रश्न यह है कि क्या बाक़ी सब चीज़ों का खाना जायज़ है । कुछ अइम्मा का यह मज़हब है कि उनके सिवा बाक़ी सब वस्तुओं का खाना जायज़ है। परन्तु मेरे नज़दीक बावजूद इसके कुछ वस्तुओं का खाना नाजायज़ है परन्तु हम उन्हें शरीयत की इस्तेलाह में हराम नहीं कह सकते। इसलिए इब्ने माजा में सलमान रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया اَلْحَلَالُ مَا اَحَلَّ اللّٰهُ فِيْ كِتَابِهٖ وَ الْحَرَامُ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فِيْ كِتَابِهٖ
(इब्ने कसीर, भाग प्रथम, आयत सूरः बक़रः)

इस से मैं यह नतीजा निकालता हूँ कि ख़ुदा तआला ने जिन वस्तुओं को हलाल किया है उन्ही को हम हलाल कह सकते हैं और जिनको हराम कहा है उन्ही को हम हराम कह सकते हैं। बाक़ी जो दरमयानी चीज़ें हैं उनके विषय में हुक्म हलाल और हराम के अधीन होगा। دلالۃ النص के तौर पर नहीं होगा। सूरः में भी इशारतन इसी सदाक़त की तरफ़ तवज्जा दिलाई गई है। वहां फ़रमाया اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ चार पेरों वालों में से तुम पर इनाम की किस्म के बहायम हलाल हैं सिवाए उनके जिनका वर्णन हरामों में किया गया है।

इनाम की कई किस्में हैं। ऊंट, बकरी, मैंडहा, दुंबा ,गाय हलाल हैं। इसके बाद फ़रमाया कि حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ अर्थात उन हलाल चीज़ों के मुक़ाबिल पर कुछ हराम भी हैं। अव्वल मुर्दा चाहे हलाल जानवर का हो, दूसरे ख़ून चाहे हलाल जानवर का हो, तीसरे ख़िंज़ीर का गोश्त, चौथे जिस पर ख़ुदा तआला के सिवा दूसरे माबूदों का नाम बुलंद किया गया हो चाहे वह जानवर हलाल ही क्यों न हों। फिर मुर्दा और ख़ून की मज़ीद व्याख्या की गई और फ़रमाया है कि نَطِيْحَة۔مَوْقُوْذَة इत्यादि हराम हैं। यह नई हुर्मत नहीं बल्कि मायत्ता और दम्मु की तशरीह है। यह सब कुछ वर्णन करके फिर ख़ुदा तआला फ़रमाता है يَسْئَلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ कि मुस्लमान पूछते हैं कि उनके लिए क्या-क्या चीज़ें हलाल की गई हैं? अब अगर اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ के अर्थ यह होते हैं कि उनके सिवा बाक़ी सब चीज़ें खानी जायज़ हैं तो जब क़ुरआन-ए-करीम ने इन चार चीज़ों को इस सवाल से पहले वर्णन कर दिया था यह सवाल दुबारा क्यों किया जाता?

हराम और हलाल चीज़ों के वर्णन करने के बाद फिर इस सवाल को वर्णन करना और उसका जवाब देना बताता है कि पहली हलाल चीज़ों की तशरीह में कुछ कठिनाई अभी बाक़ी थी जिसके विषय में सहाबा ने सवाल किया और अल्लाह तआला ने भी उनके सवाल का यह उत्तर नहीं दिया कि अभी तो हम बता चुके हैं फिर क्यों पूछते हो बल्कि सवाल की ज़रूरत तस्लीम करके इसका जवाब दिया है और वह जवाब यह दिया है कि قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ कि बाक़ी अश्या में से जो तय्यब हैं वे हलाल हैं और जो तय्यब नहीं वे हलाल नहीं। इस से मालूम हुआ कि सब हलाल चीज़ें तय्यब नहीं हैं। जो तय्यब हैं सिर्फ उनका खाना जायज़ है बाक़ी का खाना जायज़ नहीं। लेकिन उनका नाम हराम नहीं रख सकते। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इसी किस्म का मज़मून वर्णन फ़रमाया है। एक हदीस में आता है कि اِنَّ الْحَلَالَ بَيِّنٌ وَ الْحَرَامَ بَيِّنٌ وَ بَيْنَهُمَا اُمُوْرٌ مُشْتَبِهَاتٌ لَا يَعْلَمُهَا كَثِيْرٌ مِنَ النَّاسِ

(बुखारी भाग 2 किताब अल् बीयू। الحلال بيّن والحرام بيّن)

अर्थात हलाल भी वर्णन हो चुके हैं और हराम भी। फिर इन दोनों के दरमयान संदिग्ध उमूर होते हैं जिनको अक्सर लोग नहीं जानते। अतः उसके बारे में क़ियास और इलमे तिब और तजुर्बा इत्यादि से काम लेकर फ़ैसला किया जाएगा। (तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 260 प्रकाशन क़ादियान 2010 ई.)

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad